

आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024-26
“चतुर्वेदी चन्द्रिका” दिसम्बर 2024

स्थापना - माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्बत् 1947 सन् 1890

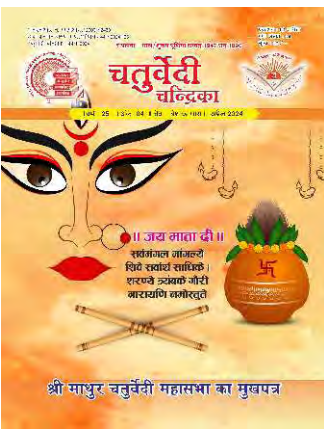
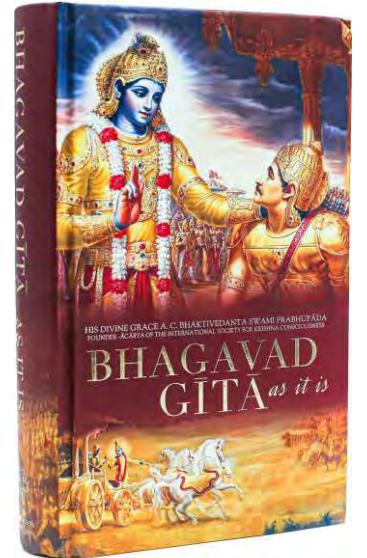
प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 24
मूल्य : 20/-



चतुर्वेदी चन्द्रिका

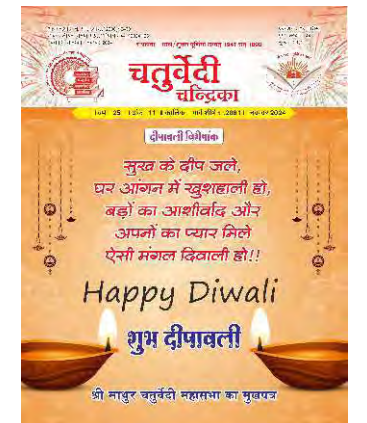
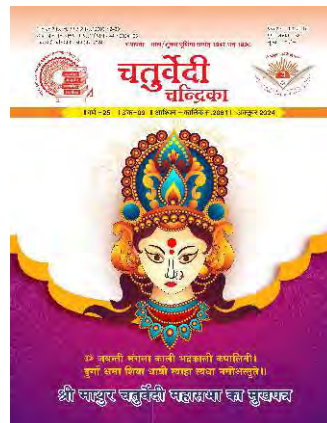
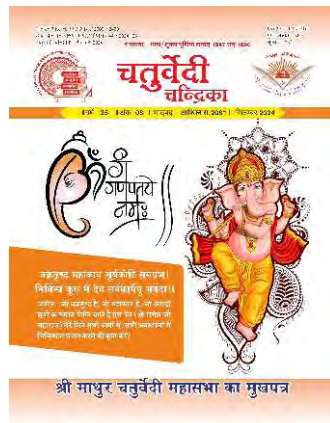


। वर्ष - 25 । अंक - 12 । मार्ग शीर्ष - पौष स.2081 । दिसम्बर 2024



चिन्तया जायते दुःखं
नान्यथेहेति निश्चयी।
तया हीनः सुखी शान्तः
सर्वत्र गलितस्पृहः॥

भावार्थ : चिंता से ही दुःख उत्पन्न होता है किसी अन्य कारण से नहीं, ऐसा निश्चित रूप से जानने वाला, चिंता से रहित होकर सुखी, शान्त और सभी इच्छाओं से मुक्त हो जाता है।



श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र



आपको और आपके परिवार को
दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें ...



**Manufacturer of High Performance
Industrial Adhesives / Sealants**



+91 98 240 945 28

manish.chaturvedi@fastoadhesives.com

www.fastoadhesives.com

Manish Rameshchandraji Chaturvedi

Director Technical
Holipura (Ahmedabad)



अंक 12
दिसम्बर 2024, वर्ष - 25

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री शशांक चतुर्वेदी
मोबा. 9826086879

कोषाध्यक्ष
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 9312242661

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. विनीता चौबे, भोपाल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', BM57, नेहरू नगर
करुणाधाम आश्रम के सामने, भोपाल
मोबा. 8707894349
ई-मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

उपसंपादक
लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, गाजियाबाद

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in
मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में
प्रकाशित लेखकों में व्यक्ति विचार संबंधित
लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति
होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का
निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	5
संपादकीय	6
सार्वजनिक विनम्र अपील	7
मेथी आयुर्वेदिक उपचार	10
भारतीय रेलवे	11
कहानी : मंजिल दूर नहीं	12
सर्दियों में दिल का दौरा	16
आत्मघाती इलाज	18
शाखा समाचार	19
श्रीमद् गीता से हिन्दूत्व	21
समाज समाचार	21
बिछड़े स्वजन	22

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :

Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED



10292296@cbi

BHIM LPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा
आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका
वार्षिक सदस्यता शुल्क -
101 + 251 = 352/-

प्रकाशक : शशांक चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक : दिलीप सिकन्दरपुरिया
वितरण सहयोगी : विश्वास चतुर्वेदी - 8160686094

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।



श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी समिति 2024-2027

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक:- डा० सतीश जी (नागपुर), श्री भरत जी (पूर्व सभापति) भोपाल, श्री आर.आर.जी (पूर्व सभापति) मुम्बई, श्री कमलेश जी पाण्डे (पूर्व सभापति) नोएडा, डॉ. प्रदीप जी (पूर्व सभापति) दिल्ली, ले. जन. विष्णुकांत जी (नोएडा), श्री विकास जी (कानपुर), श्री संतोष जी चौबे (भोपाल), श्री देवेन्द्र जी चौबे (गोंदिया), श्री महेश जी (दिल्ली)।

परामर्शदाता मण्डल:- श्री अविनाश जी (कानपुर), श्री कैलाश जी (कासगंज), डॉ. ऋषभ जी (देहरादून), श्री उपेन्द्र जी पाण्डे (कोलकाता), श्री भरत कुमार जी (रिषडा), श्री शिव जी (कोटा), श्रीमती बीना जी मिश्रा (मैनपुरी/आगरा), डॉ. निखिल जी (आगरा)

सभापति:- श्रीमती रुषा जी भोपाल

उप-सभापति:- श्री मुनीन्द्र नाथ जी (नोयडा), श्री पंकज जी (मुम्बई), श्रीमती आभा जी (नागपुर), डॉ. कुश जी (इटावा), श्री विनोद जी (गुरुग्राम), श्री सुमंत जी (आगरा), श्री अंशुमान जी (जयपुर)

सचिव:- श्री शशांक जी (भोपाल)

सह-सचिव:- श्री आशुतोष जी (कानपुर), श्री करुणेश जी (ग्वालियर), श्री गोविन्द जी (जयपुर), श्री अभयराज जी (गुरुग्राम), श्री मनीष जी (कोटा), श्रीमती बबीता जी (लखनऊ), श्री संजय जी (अहमदाबाद)

कोषाध्यक्ष:- श्री ज्ञानेन्द्र जी (साहिबाबाद)

सम्पादक:- श्री दिलीप सिंहदरपुरिया (लखनऊ), उप सम्पादक:- श्री लोकेन्द्र जी (गाजियाबाद)

मा. कार्यकारिणी सदस्य गण:- श्री दिलीप सिंहदरपुरिया (लखनऊ), डा० राकेश जी (मथुरा), श्री मनीष जी (हरदोई), श्री लोकेन्द्र जी (गाजियाबाद), श्री भुवनेश कुमार जी चौबे (गोंदिया), श्री अजय जी चौबे (भोपाल), श्री राकेश कुमार जी 'चुनचुन' (बरेली), श्री विशाल जी (आगरा), श्री राहुल जी (मैनपुरी) श्री प्रदीप जी 'संजू' (गाजियाबाद), श्री राजीव जी (अहमदाबाद), श्री विवेक जी (मुम्बई), श्री विपिन जी (लखनऊ), श्री मनीष जी (दिल्ली), श्री ललित जी (लखनऊ), श्रीमती विनीता जी (देहरादून), श्री कृष्ण बल्लभ जी (बिलासपुर), श्री संजय जी मिश्रा (कानपुर), श्री सुदीप जी (फिरोजाबाद), श्री अभिषेक जी (ग्वालियर), श्री आशीष जी 'रानू' (आगरा), श्री प्रवेश जी (कानपुर), श्री आशीष सुभाष जी (आगरा), श्री हर्षमोहन जी (आगरा), श्री आलोक जी (कोटा), श्री सतेन्द्र जी (नोयडा), श्रीमती चित्रा जी (भोपाल), श्री नवीन जी (जहांगीरपुर/लखनऊ), श्री सौरभ जी (लखनऊ), श्रीमती अंजू जी (मुम्बई), श्रीमती अर्चना जी (जयपुर), श्रीमती इंदु जी (नोयडा), श्री नवीन जी (चैन्नई), श्री हितेश जी (पुरा), श्री तनुज जी चौबे (नागपुर), श्री अरुण जी (जयपुर), श्री हर्ष कमल जी (बनारस), श्रीमती अलका जी (करनाल), श्री विमल जी (नोयडा), श्री मनोज जी (सागर), श्रीमती क्षमा जी (ग्वालियर), श्री प्रवेश जी (चांपा, छ०ग०), श्री कृष्णकांत जी (हैदराबाद), श्रीमती मीता जी (कानपुर), श्री अनुराग जी 'बब्बल' (आगरा), श्री मधुपम जी (मुम्बई), श्री धनेश जी (साहिबाबाद), श्री कैलाश जी (देवास), डॉ. मीनाक्ष जी (भोपाल), श्री मुकेश गिरीश जी पाण्डे (कोलकाता), श्री गगन जी (पुरा)

स्थाई आमंत्रित:- श्री मनोज जी (बैंगलोर), श्री पदम जी (लखनऊ), श्री

अशोक जी (फरीदाबाद), श्री गिरधारी जी (जयपुर), श्री कमलेश जी रावत (कोटा), श्री विपिन जी पाण्डे (गाजियाबाद), श्री राजेन्द्रनाथ जी (प्रयागराज), डॉ. अपूर्व जी (फिरोजाबाद), डॉ. कपिल जी (आगरा), श्री अनिल जी (भोपाल), श्री अरविंद जी (दिल्ली), श्री दिनकर राव जी (फरौली), श्री योगेन्द्रनाथ जी (ग्वालियर)

विशेष आमंत्रित:- श्री मधुकर जी पाठक (आगरा), श्री नीरज जी (चक्रधरपुर), श्री कौशल जी (दिल्ली), श्री अम्बर जी पाण्डे (भोपाल), श्री साकेत जी (मैनपुरी), श्री दीपक जी (लखनऊ), श्रीमती तृप्ति जी (पटना), श्री अंकुर जी (कटनी), श्री शैलेन्द्र जी (उवाड़), श्री अनुराग जी 'टिंचू' (कानपुर), श्रीमती शिखा जी पाठक (थाणे), श्रीमती अमिता जी (लखनऊ), श्री उमेश जी (बुलंदशहर), श्री ललित जी (जयपुर/नोयडा), श्री श्यामलाल जी (मिण्ड), श्री आलोक जी (जयपुर), श्री संजय जी (लखनऊ), श्रीमती मधु जी (देहरादून), श्री धर्मेन्द्र जी (कानपुर), श्री मनीष जी (इटावा), श्री पीयूष जी (पूना), श्री जितेंद्र जी (पूना), श्री मधुर जी (बैंगलोर), श्री यदुवेश जी (पुरा/लखनऊ), श्री नवीन जी (बैंगलोर), श्री दिलीप जी (हरिद्वार), श्री शैलेन्द्र जी (फिरोजाबाद), श्री प्रवीण जी (हैदराबाद), श्री नीलकमल जी (कलकत्ता), श्री मुकेश जी (तरसोखर/रिसड़ा), श्री शैलेन्द्र जी (फरीदाबाद), श्री नरेश जी (भोपाल), श्री विश्वास जी (भोपाल), श्रीमती वंदना जी (रिसड़ा), श्री प्रशांत जी (मथुरा), श्री नरेन्द्र कुमार जी चौबे (ग्वालियर), श्री भूषण जी (साहिबाबाद), श्री दुर्गेश जी (जयपुर), श्री अनुराग जी (गुरुग्राम), श्री विशाल जी (दानपुर) श्री प्रवीण जी 'छोना' (फरौली), श्री लोकेन्द्र (कानपुर)

मूल निवास प्रकोष्ठ:- श्री गगन जी (पुरा) संयोजक, श्री जय चतुर्वेदी नानू फरौली, श्री गोविन्द चतुर्वेदी (जहांगीरपुर), श्री सौरभ "आशू" (पुरा), श्री समर्थ (होलीपुरा), श्री शैलेन्द्र (फरौली), श्री मधुर (पुरा), श्री धर्मेन्द्र चतुर्वेदी (पिनाहट)।

शाखा सभा प्रकोष्ठ:- 1) ले. जन. विष्णुकांत जी नोएडा, 2) श्री विवेक जी, मुंबई 3) श्री अजय जी, लखनऊ 4) श्री अजय जी तिवारी, ग्वालियर 5) श्री सुनील जी, जयपुर 6) श्री विनय जी, कोटा 7) श्रीमती नीतिका जी, गुरुग्राम 8) श्री सुमंत जी, भोपाल 9) श्री प्रदीप जी, गाजियाबाद 10) श्री सुशील जी, फरीदाबाद, 11) श्री हरेश चतुर्वेदी, प्राचीन सभा, आगरा 12) श्री मुकेश जी, आगरा (रजि.) 13) श्री संजय जी, अहमदाबाद 14) श्री पंकज जी, हरदोई, 15) श्री भूपेन्द्र जी, जहांगीरपुर सभा 16) श्री गौरी शंकर जी, समाज, फरौली 17) श्री महेश जी, देहली सभा 18) श्री शैलेन्द्र जी, मथुरा सभा 19) श्री ऋषभ जी, देहरादून 20) श्री राजेन्द्र जी, फरुखाबाद सभा, 21) श्री एम. बाबू, मैनपुरी सभा, 22) श्री समीर चतुर्वेदी, पटना सभा, 23) डॉ. अरुण चतुर्वेदी, नागपुर सभा

युवा प्रकोष्ठ:- (1) श्री मधुपम जी- मुम्बई (संयोजक) (2) श्री खगेश जी (कोलकाता) सह-संयोजक (3) श्री नवीन जी (मथुरा) (4) श्री प्रमेन्द्र जी (ग्वालियर) (5) श्री आशीष जी (कोलकाता) (6) श्री नमन जी (फिरोजाबाद) (7) श्री सुनील जी (जयपुर) (8) श्री हेमंत जी (कोलकाता) (9) श्री नमन जी (लखनऊ) (10) श्री दिवस जी (लखनऊ) (11) श्री शशांक जी (जमुआ रामगढ़)

प्रवासी भारतीय प्रकोष्ठ:- (1) श्री विवेक जी-संयोजक (मुम्बई)

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ: अरविंद चतुर्वेदी दिल्ली संयोजक, संजय चतुर्वेदी फरीदाबाद

चिकित्सा प्रकोष्ठ:- (3) डॉ. मीनाक्ष जी-संयोजक (भोपाल)

महासभा कार्यालय: 405/406, चिरंजीव टावर नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110019



॥ अपनों से अपनी बात ॥

● उषा चतुर्वेदी

Email : president@chaturvedimahasabha.in

आदरणीय बंधुवर / भगिनी

सादर पालागन

हालात और निर्णय गहरे दोस्त हैं।

बहुत बार हालात निर्णय के कारण बन जाते हैं

कई बार निर्णय हालात के कारण लेना पड़ते हैं

आप सभी लोगों ने दीपावली सपरिवार प्रसन्नता से मनाई होगी। कार्तिक का पावन मास भी समाप्त हो गया और इसी के साथ ही प्रारंभ हो गई गुलाबी शीत। मौसम का बदलाव सुहाना होता है लेकिन साथ में समस्याएं भी लेकर आता है। इस बार मौसम परिवर्तन ने समस्याएं अधिक पैदा की। लेकिन हम लोगों ने इन स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से दो दो हाथ कर लिए और तैयार हैं आगे अपने कर्तव्य निभाने को।

सभी आदरणीय शाखा सभा अध्यक्षों से विनम्र आग्रह है दिसंबर मास में आहुत होने वाली राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक जो कि ग्वालियर में दिनांक 22 दिसंबर को सम्पन्न होगी। बैठक में आवश्यक रूप से उपस्थित हों। बैठक के पश्चात अग्रेजी नववर्ष भी शीघ्र ही आ जाएगा। इस बार जनवरी माह में मेरी प्राथमिकता विभिन्न शहरों एवं नगरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने वाली शाखा सभाओं के कार्यकारिणी एवं अन्य बन्धुओं से ऑनलाइन चर्चा करने की होगी। अतः आप सभी लोग अपने-अपने नगर शहर की बैठक की संभावित तिथि निश्चित कर बैठक में अवगत करा दें ताकि महासभा एवं उसके पदाधिकारी सभी लोगों से मुलाकात कर सकें। तथा आप लोगों के बहुमूल्य सुझावों से महासभा अवगत हो सके।

महासभा तथा शाखा सभा आपसी सामंजस्य बनाकर समाज हित में कार्य कर सकें। महासभा के सांस्कृतिक प्रकोष्ठ ने एक अभिनव पहल प्रारंभ की पुरुषों का गायन जूम ऐप पर। इस गायन कार्यक्रम के माध्यम से समाज की बहुत सी नवीन प्रतिभाओं से परिचय हुआ चतुर्वेदी समाज किसी भी कला में पीछे नहीं। प्रख्यात गायक आदरणीय किशोर जी आदरणीय प्रभंजय जी आदरणीय धर्मेज जी आदरणीय टिकेंद्र जी ग्वालियर, आदरणीय सौरभ जी लखनऊ, जमुआ रामगढ़ के आदरणीय गुंजन जी आदि बहुत से बंधु जिन्होंने अपनी गायकी से मन मोह लिया। महासभा सभी का धन्यवाद प्रेषित करती है। हमारे अन्य प्रकोष्ठों से भी हमारा आग्रह है वह अपने कार्यक्रमों की योजना बनाएं उनके योजना को क्रियान्वित करने के लिए समाज के सभी सदस्य सहयोग करने के लिए तत्पर हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी हमारे बहुत से बंधावों ने सहयोग किया तथा अनेक प्रतिभाओं से परिचय कराया उनको भी धन्यवाद। इस संबंध में मेरा अपने सभी सहयोगी पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्यों से आग्रह है की महासभा का कोई भी कार्यक्रम हो किसी भी प्रकोष्ठ का हो सभी को श्रोता के रूप में सम्मिलित होकर सहयोग करना चाहिए ताकि कार्यक्रम करने वाले की हौसला अफजाई हो।

इस कार्यक्रम में हमारे राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आदरणीय अंशुमान जी आदरणीय डॉक्टर कुश जी जिन्होंने कार्यक्रम का संचालन किया सचिव श्री शशांक चतुर्वेदी इन्होंने भी कार्यक्रम का संचालन किया हमारे संरक्षक आदरणीय प्रदीप चतुर्वेदी जी, श्री भरत जी, सह सचिव श्री मनीष जी, बबीता जी, संपादक आदरणीय दिलीप सिकंदरपुरिया जी महिला प्रकोष्ठ की उप संयोजक श्रीमती अनुपमा जी कोषाध्यक्ष आदरणीय ज्ञानेंद्र जी एवं उप संपादक आदरणीय लोकेंद्र जी कार्यक्रम सम्मिलित होकर सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के संयोजक श्री अरविंद चतुर्वेदी एवं श्री संजय जी फरीदाबाद सदस्य का उत्साहवर्धन किया। दिनांक 16 नवंबर को आगरा की प्राचीन चतुर्वेदी सभा ने सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न कराकर एक पहल की वह भी बधाई के पात्र हैं। समाज में दिवंगत हुई पवित्र आत्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि। आप सभी लोगों से मुलाकात होगी ग्वालियर में अपने नए-नए सुझावों के साथ। महासभा को उच्च पायदान तक ले जाना। कृपया अपने सुझावों को लिखित में चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशन हेतु अवश्य भेजें। पत्रिका आपकी अपनी है आप सहयोग कर सकते हैं सामग्री से सुझावों से तथा अर्थ से। अन्नपूर्णा योजना गुल्लक योजना में दिल खोलकर सहयोग करें। ताकि समाज के जरूरतमंद को अधिक से अधिक सहायता पहुंचाई जा सके।

सादर धन्यवाद सहित



संपादकीय



सादर पालागन।

Man is a social Animal ऐसा विश्वास है कि समाज के वगैर मनुष्य का अस्तित्व संभव नहीं है.... हर मनुष्य को एक दूसरे से सहयोग की आवश्यकता होती है, यही सामाजिकता का जन्म होता है, माना जाता है कि परोपकार ही सामाजिकता का पर्यायवाची है.....

ऋग्वेद (1/147/3) में लिखा है कि..

ये पायवो मामतेयं ते अग्ने, पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन्!

ररक्ष तान्सुकृतो विश्ववेदा, दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभु:!!

अर्थात्... समाज कार्य और परमार्थ के कार्यों में निंदा, लांछन, उपहास आदि का भय नहीं करना चाहिए, ऐसे मनुष्यों की रक्षा स्वयं परमात्मा करता है! अतः निश्चित होकर समाज कार्य या लोक कल्याण में लगे रहना चाहिए! मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह दूसरों के काम आए, यदि वह शक्ति होते हुए भी सामाजिक कार्य नहीं करता तो वह पशु समान ही है। हमारा सौभाग्य है कि हमारा जन्म माथुर चतुर्वेदी समाज में हुआ, जहां सभी स्वजन.... जय समाज, जय संगठन के भाव से समाज कल्याण के लिए सदैव चतुर्वेदी महासभा के तत्वावधान में क्रियाशील रहते हैं।

समाज सेवा की तीन परिस्थितियां परिलक्षित होती हैं...

1. परामर्श

2. कार्यसिद्धि में सहयोग

3. आर्थिक सहयोग।

* अपनी योग्यता, क्षमता और अनुभव से लोगों को सन्मार्ग पर चलने का परामर्श देना।

* जब भी संभव हो तो दूसरों को लक्ष्य प्राप्ति एवं कार्यसिद्धि में तन मन से सहयोग देना।

* जहां भी संभव हो तो दूसरों को आवश्यकता एवं कार्यसिद्धि में यथासंभव आर्थिक सहयोग या व्यवस्था करना।

सामाजिक कार्य करना असंभव तो नहीं मुश्किल अवश्य है, लेकिन अपने माथुर चतुर्वेदी समाज में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो तन मन धन से सदैव समाज कल्याण हेतु कार्यरत रहते हैं। ऐसे समाज सेवी परोपकारी सदा प्रसन्नचित रहते हुए आंतरिक हर्ष एवं दिव्य प्रकाश का अनुभव करते हैं। समाज सेवा के मार्ग में अनेकानेक बाधाएं आती हैं जो मन को विचलित कर सकती हैं, लोग तरह तरह के लांछन एवं आरोप लगाकर हतोत्साहित करते हैं। परन्तु सच्चे समाज सेवी कोई क्या कहेगा इसकी चिन्ता किए बिना अपने कर्तव्य पालन तथा परमार्थ में जुटे रहते हैं।

ऐसे ही समाज सेवी आगामी 22 दिसम्बर 24 को ग्वालियर मीटिंग में शामिल होंगे। उसके बाद सनातन धर्म का सबसे बड़ा ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक महाकुंभ मेला आगामी 13 जनवरी 25 से 27 फरवरी 25 तक प्रयागराज में आयोजित होने वाला है, जिसमें नागा साधु एवं संतों को विशेष शाही स्नान मौनी अमावस्या 29 जनवरी को पड़ेगा, अन्य प्रमुख स्नान मकर संक्रांति 14 जनवरी, बसंत पंचमी 3 फरवरी, माघी पूर्णिमा 12 फरवरी तथा महाशिवरात्रि 26 फरवरी को होंगे। हमारा विश्वास हर समाज सेवी कुंभ स्नान का पुण्य अवश्य लेगा। इस पुण्य लाभ से ऐसा लगता है कि भगवान सदा हमारे साथ है, ऐसा मानकर हम तत्त्वज्ञ, जीवन मुक्त हो सकते हैं। नूतन कैलैण्डर वर्ष 2025 के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित, सादर एवं सप्रेम....

- दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ

सार्वजनिक विनम्र अपील 22.11.2024

सम्माननीय बन्धुवर/बहिन जी
सादर पालागन

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि रु २४००० वार्षिक (रु २०००/- प्रति माह के अनुसार) से विगत कई वर्षों से श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित के लिए, बांधवों के अमूल्य सहयोग से अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति सहायता अपने ही समाज के 41 परिवारों के मध्य प्रदान की जा रही है।

वर्तमान में यह सहायता राशि त्रैमासिक अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर तथा जनवरी के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है। वित्तीय वर्ष २०२४-२५ की प्रथम, द्वितीय तथा तिमाही की सहयोग राशि Rs. 2,56,200/- तीन बार लाभार्थियों के - बैंक खातों में सीधे भेजी जा चुकी है। सहयोग देने वाले बांधवों के नाम तथा उन के द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि :-

1. स्व. बाबू ओंकारनाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा) की स्मृति में Rs. 12,000/- और स्वर्गीय प्रभात चतुर्वेदी (इटावा) की स्मृति में Rs.12,000/- द्वारा विकास चतुर्वेदी @चुन्ना भैया , संरक्षक , श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा एवं संयोजक - बाबू ओंकारनाथ चतुर्वेदी धर्मशाला समिति द्वारा - Rs 24,000/-
2. जन. श्री अजय कुमार चतुर्वेदी द्वारा रुपये 2100/-
3. अपने पौत्र चि ईशान के जन्म दिन (१४ मार्च) के उपलक्ष्य में श्री पदम कुमार जी चतुर्वेदी (तरसोखर/लखनऊ) द्वारा रुपये -5000/-
4. अपनी पौत्री कु धनिष्का पुत्री श्री अभिषेक जी (सिंगापुर) के जन्म दिन के उपलक्ष्य में श्री अनिल जी तथा श्रीमती मधुबाला चतुर्वेदी (रोहिणी /दिल्ली) द्वारा - 11000/-
5. सुश्री नलिनी चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा) राजकीय सेवा में प्रवक्ता के पद से ३१ मार्च २०२४ को सफलता पूर्वक सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य में - रुपये 11,000/-
6. अपनी पौत्री के जन्मदिन के उपलक्ष्य में श्री पंकज जी, लखनऊ द्वारा - Rs . 2400/-
7. श्री दिलीप सिकंदरपुरिया (लखनऊ) द्वारा - Rs,2100/-
8. श्री लोकनाथ जी (लखनऊ) द्वारा Rs.1000/-

9. श्री दीपक जी लखनऊ द्वारा Rs. 5000/-
10. श्री अविनाश जी (होलीपुरा/ कानपुर) Rs-12,000/-
11. आनंद सिंह चतुर्वेदी परिवार (होलीपुरा) की ओर से - (श्री भरत जी (रिषड़ा/होलीपुरा) द्वारा - Rs 25,000/-
12. अपने नाना स्वर्गीय श्री धर्म नारायण चौबे (होलीपुरा) एवं नानी स्वर्गीय श्रीमती रंगो देवी चतुर्वेदी की स्मृति में सौरभ चतुर्वेदी सुपुत्र कैप्टन डॉ प्रवीण चंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा) द्वारा 25,000/-
13. अपने पिता स्वर्गीय श्री मोतीलाल चतुर्वेदी (मुख्त्यार साहब) तथा माता स्वर्गीय श्रीमती रूपो देवी चतुर्वेदी की स्मृति में कैप्टन डॉ प्रवीण चंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा) द्वारा 25,000/-
14. अपने पुत्र चि आयुष के Redbul Energy (MNC) में area manager दिल्ली NCR के पद पर पदोन्नति के उपलक्ष्य में श्री मनोज जी चतुर्वेदी (सागर) द्वारा Rs. 5000/-
15. डॉ मनीष चतुर्वेदी (कोटा) पूर्व राष्ट्रीय संयोजक युवा प्रकोष्ठ द्वारा Rs. 24,000/-
16. समाज रत्न स्व० खरगराम जी की पावन स्मृति में , उन के पौत्र श्री मदन कुमार चतुर्वेदी (होलीपुरा/कलकत्ता) द्वारा 24000/-
17. अपनी पूज्यनीय माताजी श्रीमती अनुराधा चतुर्वेदी की ओर से उनके तथा स्व मदन मोहन जी के सुपुत्र श्री ऋषभ चतुर्वेदी द्वारा Rs .12,000/-
18. अपनी चाची श्रीमती निधी एवं चाचा श्री मनीष (फरौली/गाजियाबाद) की वैवाहिक वर्षगांठ के शुभ अवसर पर श्री दीपांशु जी सुपुत्र श्री लोकेंद्र जी (फरौली/गाजियाबाद) द्वारा Rs.12,000/-
19. श्रीमती निर्मला चतुर्वेदी विनायक कॉम्पलेक्स दादाबाड़ी कोटा द्वारा Rs. 2000/-
20. श्री आलोक चतुर्वेदी सुखधाम कॉलोनी कोटा द्वारा Rs . 6000/-
21. श्री विनय चतुर्वेदी प्रतापनगर कोटा द्वारा Rs 6000/-
22. स्व. प्रो. रमेश चंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/सिलवासा) की प्रथम पुण्यतिथि (3rd may 2024) स्मृति में श्रीमती उषा चतुर्वेदी (पत्नी) के द्वारा Rs 24,000/-

चतुर्वेदी चन्द्रिका

23. श्री रविकान्त चतुर्वेदी, कोटा - Rs1000/-
24. अक्षय तृतीया के पुनीत पर्व पर अपने पूजनीय माता श्री तथा पिता श्री की पुण्य स्मृति में। ; अन्नपूर्णा तथा छात्रवृत्ति सहयोग) श्री केदार नाथ जी जयपुर द्वारा Rs 24,000/-
25. गुप्त सहयोग (भरूच/चेन्नई) Rs 21,000/-
26. श्रीमती कामिनी देवी की पुण्य स्मृति में श्री गजेंद्र चतुर्वेदी (लखनऊ) द्वारा Rs 5100/-
27. श्रीमती कस्तूरी देवी की पुण्य स्मृति में श्री जगदीश जी (भोपाल) द्वारा Rs.5100/-
28. अपनी मौसी स्व प्रेमलता (प्यानो) की पुण्य स्मृति (30.04.2024) में सुश्री हर्षिता सुपुत्री श्री शेखर एवं श्रीमती तारा चतुर्वेदी (चंद्रपुर/इंदौर) द्वारा Rs .12,000/-
29. अपने पूज्य पति स्व. दीपक चतुर्वेदी की पुण्य स्मृति में श्रीमती शशि जी (अजमेर) द्वारा Rs.5100/-
- s30. श्री माथुर चतुर्वेदी समुदाय मुंबई द्वारा - Rs.3,00,000/-
31. श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (कानपुर) द्वारा -Rs 5100/-
32. अपने बाबा स्वर्गीय प्यारेलाल जी चतुर्वेदी तथा दादी स्व श्रीमती शकुंतला जी की स्मृति में श्रीमती आकांक्षा चतुर्वेदी पुत्री श्री अजय एवं श्रीमती बीना जी (कमतरी/कानपुर) द्वारा Rs 11,000/-
33. अपने माता श्रीमती रेणु जी तथा पिता श्री पदम जी की ५०वीं शादी सालगिरह के उपलक्ष्य में श्री तुषार चतुर्वेदी (तरसोखर/लंदन) द्वारा Rs 5100/-
34. अपने पिता श्री स्व. राकेश जी के जन्मदिन की स्मृति में श्री अनुज जी (बिजकोली/गाज़ियाबाद) द्वारा Rs.12,000/-
35. श्री अनुपम चतुर्वेदी द्वारा अपने पिता श्री अशोक कुमार चतुर्वेदी की स्मृति में Rs1100/-
36. श्री हृदय नाथ जी चतुर्वेदी (होलीपुरा/ भोपाल) द्वारा Rs- 11000/-
37. अपनी माता स्व. शकुंतला जी की स्मृति में श्री मनोज चतुर्वेदी (सागर/आगरा) द्वारा - 2100/-
38. अपने पिता श्री ओंकार पांडे के स्मृति में श्री संजय चतुर्वेदी (होलीपुरा/लखनऊ) द्वारा Rs.5100/-
39. अपने बाबा श्री पृथ्वी नाथ जी स्मृति में हर्ष चतुर्वेदी(अमेरिका) सुपुत्र श्री किशोर चतुर्वेदी (आगरा/भोपाल) द्वारा Rs.12,000 /-
40. तारुजी स्व. कामिनी मोहन जी की पुण्य तिथि (5 जून) पर हर्ष मोहन @मोहित द्वारा अन्नपूर्णा सहायतार्थ 6000/- (र.क्र.- 2238)
41. श्री रुचिर सुपुत्र श्री कमलेश जी, झाँसी -12000/-
42. श्री आनंद जी, प्रयागराज - 11000/-
43. अपने पिता श्री यतीश चंद्र जी स्मृति में श्री दिवस चातुर्वेदी (लखनऊ) द्वारा Rs. 11,000/-
44. श्री रचित सुपुत्र श्री कमलेश जी, झाँसी -12000/-
45. सौ. आरुषी-चि.मृदुल के शुभविवाह (11 मार्च 2024) के अवसर पर श्री राजीव जी (मैनपुरी/ लखनऊ) ने - 2100/-
46. स्वर्गीय श्रीमती सुषमा चतुर्वेदी (कछपुरा) पत्नी स्वर्गीय डॉ. श्री यतींद्र नाथ चतुर्वेदी (औरैया/सिकंदरपुर) की स्मृति में उनकी पुत्री डॉ. प्राची चतुर्वेदी (होलीपुरा/भोपाल) द्वारा 5000/- अन्नपूर्णा सहायतार्थ दिए गए।
47. स्व.श्रीमती गीता चतुर्वेदी की स्मृति में श्री दिवाकर नाथ चतुर्वेदी (पुरा/भोपाल) द्वारा 15000/-
48. श्रीमती विमला चतुर्वेदी पत्नी स्व. जयप्रकाश चतुर्वेदी(फरौली/भोपाल) द्वारा- 11000/-
49. श्री अशोक जी एवम् श्री आनंद जी, हवेली होलीपुरा द्वारा अन्नपूर्णा सहायता हेतु - 24,000/-
50. श्री कृष्ण कांत चतुर्वेदी(राघो) 12000/ (-पुरा/हैदराबाद), श्री प्रणव चतुर्वेदी (पंकू)(कमतरी/ हैदराबाद) द्वारा 5000/- एवं श्रीमती बीना मिश्रा(मैनपुरी/आगरा) द्वारा 8000/- कुल जमा 25000/-
51. स्वयंभू चतुर्वेदी, बैंगलोर- 24000/-
52. स्व.मुक्ता प्रसाद जी (फरौली/मुंबई) की स्मृति में जयदीप जी द्वारा 5100/-
53. अपने पौत्र चि. सहस्र पुत्र श्री नितिन-श्रीमती अंकिता के जन्मदिन के उपलक्ष्य में श्री नवीन जी-श्रीमती मधु (जहांगीरपुर/लखनऊ) द्वारा रूपया 2100/-
54. श्री प्रभाकर तथा श्री शरद चतुर्वेदी (हिन्डौन/लखनऊ) के द्वारा अपने पिता स्व. श्री बैकुण्ठ नाथ चतुर्वेदी एवं माँ स्व. श्रीमती शान्ती देवी (जावित्री देवी) की पावन स्मृति में 24000/-
55. पितृ पक्ष के अवसर पर, अपने पूर्वजों स्व श्री बाबूराम जी, पिता श्री कामता प्रसाद जी एवं माता श्री अंगूरी देवी तथा अन्य सभी बुजुर्गों की पुण्य स्मृति में श्री भुवन कुमार चतुर्वेदी (मैनपुरी/गुरुग्राम) एवं परिवार द्वारा - Rs. 36000/-
56. श्रीमती शीला चतुर्वेदी की स्मृति में श्री कृष्णकांत जी (होलीपुरा/लखनऊ) द्वारा-12000,
57. धर्मेन्द्र जी,(पिनाहट) -2100/-,
58. श्री एकांश सुधीर जी, नोएडा द्वारा अपने बाबा स्व.श्री प्रताप चंद्र जी व दादी स्व. श्रीमती कस्तूरी देवी की स्मृति में - 5100/-
59. श्रीमती छमा पुनीत चतुर्वेदी, ग्वालियर -2100/-,
60. श्री नमन चतुर्वेदी -2100/-,
61. श्री विनोद चतुर्वेदी गुरुग्राम -5100/-,

चतुर्वेदी चन्द्रिका

62. दिवस चतुर्वेदी, लखनऊ द्वारा पुत्ररत्न की प्राप्ति के अवसर पर -5100/-
63. श्री रूपक चतुर्वेदी लखनऊ द्वारा- 5100/-,
64. स्व. लक्ष्मी नारायण ठाकुर की हवेली परिवार होलीपुरा की ओर से डॉ. मनोज चतुर्वेदी (ग्वालियर) द्वारा 12000/-
65. श्रीमती नीतिका अभय राज चतुर्वेदी (गुरुग्राम) -2100/-
66. श्रीमती अनीता चतुर्वेदी, नोएडा 1100/-
67. सुश्री सिद्धि चतुर्वेदी सुपुत्री श्रीमती निधि एवं श्री मनीष कुमार चतुर्वेदी (फरौली/गाजियाबाद) के जन्मदिन के अवसर पर श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (फरौली/गाजियाबाद) द्वारा महासभा अन्नपूर्णा -5100/-
68. श्री दीपक चतुर्वेदी, लखनऊ 1000/-
69. श्री पदम चतुर्वेदी, लखनऊ 1000/-
70. डॉ. मनीष चतुर्वेदी, कोटा 1100/-
71. धनेश चतुर्वेदी, साहिबाबाद -11000
72. श्रीमती आभा चतुर्वेदी, नागपुर -25,000/-
73. विवेक चतुर्वेदी, मुम्बई -1,00,000/-
74. डॉ. राकेश चतुर्वेदी, मथुरा -5200/-
75. बीना मिश्रा, आगरा - 1100/-
76. स्वर्गीय श्री दयाशंकर चतुर्वेदी (कानपुर/होलीपुरा) की पुण्य तिथि (17/10/24) पर उनके पुत्रों राजीव-संजीव एवं समस्त कक्का परिवार रु. 24,000/-
77. शेवी चतुर्वेदी पुत्री गजेंद्र चतुर्वेदी (फरौली/हावडा) द्वारा अपने

- बाबा स्व. गुरुदत्त चतुर्वेदी (बिटन) की पुण्य तिथि में 2100/-
78. चि.अर्पित चतुर्वेदी पुत्र श्री पवन चतुर्वेदी (पुरा/भोपाल) की नियुक्ति येस बैंक भोपाल में कलेक्शन मैनेजर के पद पर हुई। इस उपलक्ष्य में अन्नपूर्णा योजना में श्रीमती मनीषा- श्री पवन चतुर्वेदी ने 2100/- प्रदान किये। बधाई।
79. श्रीमती प्रीति चतुर्वेदी-श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (कोषाध्यक्ष, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा फरौली/साहिबाबाद) की विवाह की वर्षगांठ की अवसर पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 11000/- प्रदान करें। (र.क्र.-3008)

कुल प्राप्त सहयोग राशि योग : **Rs. 11,77,300/-**

इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिए सादर आग्रह है। सभी से बांधव तथा बहनों से करबद्ध निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में खुले हृदय से सहयोग देने की कृपा करें। सहयोग राशि भेजने के लिए :-महासभा खाता विवरण:

Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha
Saving A/C no.1006238340
ifs code- cbin0283533
Central bank of india
Branch- Anand vihar delhi

राशि स्थानांतरण के बाद उस राशि की सूचना निम्न नंबर पर अपने दूरभाष तथा email के साथ भेजने की कृपा करें।

निवेदक : शशांक चतुर्वेदी, मंत्री

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, 9826086879

बुढ़ापा ढालम

- सुचित्रा चतुर्वेदी, लखनऊ

संस्कृत में जानिए.....
 वृद्धावस्था में क्या हालत होती है.....

मुखे न दाँतम , माथे न बालम ,
 बधिरम कानम , पोपले गालम.

दुखत अंगम, सिकुड़म खालम,
 न शेष सुरम, न शेष तालम

वैद्यम बुलावम, पूछम हालम,
 काया अकड़म, मकड़ीं जालम

वैद्यम उवाचम, परहेज पालम,

चटनी, अचारम सब त्याग ढालम

अब रोटी ज्वारम च फीकी दालम,
 शाँतिमय गुजारम अब शेष सालम

भोजन थाली रूखी-सूखी घालम,
 देखे बनावे मुख पीत, लालम

सब खावे पूड़ी हलवा थालम,
 मुखेन टपके टप टप रालम

बहुएँ भी टोकम, पौत्रम भी टालम
 पुत्रम भी अब तो गृह से निकालम

सम्मुख आवे जवानी खयालम,
 व्याधि तलवारम बुढ़ापा ढालम

अब कौन पूछे, ये प्रश्न विशालम
 न बैंक बैलेन्स, न पास मालम

स्वास्थ्य गिरावम ज्यों वृक्ष छालम
 पग-पग आवे, समीप कालम

अब न पूछो हालम, ना पूछ चालम
 अब न पूछो हालम, ना पूछ चालम

मैथी आयुर्वेदिक उपचार

- मुकेश चतुर्वेदी, होलीपुरा/कोलकाता

मैथी का साग सब्जी सभी क्षेत्रों में रुचिपूर्वक उपयोग किया जाता है। मैथी दाना एक स्वास्थ्यवर्धक एंटीआक्सीडेंट, प्राकृतिक एंटीबायोटिक एवं रक्तशोधक औषधि है। आयुर्वेद में मैथी अस्सी प्रकार के वातरोगों में प्रभावी औषधि है। मैथी में प्रोटीन, विटामिन, आयरन, पोटेशियम, फास्फोरस, कैल्शियम आदि खनिज लवणों की उपलब्धता मानी जाती है। मैथी मृदु विरेचक गुणवत्ता के कारण हृदयरोग, रक्तचाप, पाचनतंत्र रोगों में लाभकारी होने के साथ ही रोग प्रतिरोधक शक्ति भी बढ़ाती है। यह कृमिनाशक एवं कफरोग निवारक भी है। आयुर्वेद के अनुसार मैथी के उपयोग..

गठिया व संधिवात : * 5 ग्राम मैथी दाना गुनगुने पानी से सुबह-शाम निगल लें।

* मैथी के लड्डू बनाकर शीतकाल में नवम्बर से फरवरी तक नित्य सेवन करें।

* मैथी के पत्तों का साग या मैथी दाना अंकुरित कर सब्जी बना कर नियमित रूप से लें।

गठिया-संधिवात एक जटिल रोग है, इसके लिए लंबे समय तक पथ्य परेहज करना चाहिए। यथाशक्ति टहलना, व्यायाम, आसन-प्राणायाम नियमित रूप से अवश्य करें।

स्तन पान : मैथी में डावोस्जेनिन नामक तत्व पाया जाता है, जो मां का दूध बढ़ाने में मदद करता है, स्तनपान कराने वाली महिलाओं को गोदुग्ध, शतावरी चूर्ण एवं सफेद जीरा के सेवन के साथ मैथी के लड्डू खिलाने से माता का दूध बढ़ने लगता है।

हाथ-पैरों के दर्द : मैथी दाना को देशी घी में भूनकर पीस लें, फिर इस चूर्ण को गुड़ चासनी में मिला कर छोटे-छोटे लड्डू बना कर 15 दिन सुबह शाम सेवन करने से दर्द से राहत मिलती है।

जीर्ण आम्रातिसार : * 5 ग्राम मैथी दाना चूर्ण, 1ग्राम सोंठ, 10 ग्राम गुड़ तथा 200 ग्राम मथे हुए दही में मिलाकर लेने से लाभ मिलता है।

* 10 ग्राम मैथी दाना पीसकर 150 ग्राम दही में मिलाकर दिन में दो तीन बार लेने से लाभ मिलता है।

* पथ्य के लिए उबला पानी, नींबू पानी, पका केला, मूंग दाल एवं हल्का आहार ही ले।

कब्ज : * एक चम्मच मैथी दाना प्रति दिन सुबह शाम गुनगुने पानी के साथ निगल लेने से लाभ मिलता है।

* मैथी दाना चूर्ण बना कर गुड़ व पानी के साथ लेने से राहत मिलती है।

मधुमेह : * 20 ग्राम मैथी दाना रात में एक गिलास पानी में भिगो कर रख दें, प्रातः मसलने के बाद छानकर नियमित रूप से लेने से लाभ मिलता है।

* अंकुरित मैथी दाना तथा मैथी सब्जी को सप्ताह में 3-4 दिन लें।

* पथ्य में मधुमेह रोगी चावल, आलू, शकरकंद, केला, चीनी, गुड़ और मेदा से परेहज रखें।

रक्तस्रावी बवासीर : * 15 ग्राम मैथी दाना चूर्ण को 250 ग्राम दूध में ओटाकर सोते समय 10-15 दिन लेने से लाभ मिलता है।

* 15 ग्राम मैथी के बीज का चूर्ण 250 ग्राम पानी में उबालकर आधा कर लें, फिर ठंडा होने पर सेवन करें। नियमित रूप से लेने से लाभ मिलता है।

त्वचा रोग : मैथी के ताजे पत्ते पीसकर थोड़ी हल्दी पाउडर मिलाकर लेप को चेहरे पर लगाने से दाग धब्बे मिटाने में राहत मिलती है नियमित रूप से लेने से त्वचा में निखार आता है।

प्रसव के बाद : * प्रसव के बाद ज्वर आदि रोग होने का भय रहता है, एक किलो मैथी को महीन पीसकर उतना ही देशी घी मिलाकर 3 लीटर दूध में धीमी आंच पर पकाएं, इसके गाढ़ा होने पर देशी खांड की चासनी बनाकर मिला दें। 10-10 ग्राम मिश्रण को सुबह-शाम सेवन से प्रसव बाद रोगों में लाभ मिलता है।

* मैथी के लड्डू सेवन गर्भाशय की शुद्धि एवं संकुचन में लाभ मिलता है। इसके साथ ही

रजो निवृत्ति के बाद की समस्याएं जैसे डिप्रेशन, तनाव, अनिद्रा आदि में भी राहत मिलती हैं।

लू लगने पर : मैथी के सूखे पत्ते 5 ग्राम लेकर एक गिलास पानी में भिगो दें, दो घंटे बाद मसलने के बाद छानकर शहद के साथ लेने से लाभ मिलता है। मैथी के साग आटे में मिलाकर पोष्टिक एवं स्वादिष्ट रोटी में रक्तशोधक, वातनाशक एवं कब्जनाशक गुण होते हैं। आयुर्वेदिक विशेषज्ञ का कहना है कि किसी भी उपचार विधि का प्रयोग चिकित्सक की सलाह के बाद ही करना चाहिए।

भारतीय रेलवे

- संतोष चतुर्वेदी, पिनाहट/लखनऊ

आज जो भारत में रेलवे है.., उसको भारत में कौन लाया ?
आपका उत्तर ब्रिटिश होगा।

ब्रिटिश सिर्फ विक्रेता थे, यह वास्तव में एक भारतीय का स्वप्न था।

रेलवे अंग्रेजों के कारण नहीं बल्कि नाना के कारण भारत आयी। भारत में रेलवे आरम्भ करने का श्रेय हर कोई अंग्रेजों को देता है लेकिन श्रीनाना जगन्नाथ शंकर सेठ मुर्कुटे के योगदान और मेहनत के बारे में कदाचित कम ही लोग जानते हैं।

१५ सितंबर १८३० को दुनिया की पहली इंटरसिटी ट्रेन इंग्लैंड में लिवरपूल और मैनचेस्टर के बीच चली। यह समाचार हर जगह फैल गया। बम्बई (आज की मुंबई) में एक व्यक्ति को यह बेहद अनुचित लगा। उन्होंने सोचा कि उनके गांव में भी रेलवे चलनी चाहिए। ब्रिटेन में अभी रेल चल रही थी और भारत जैसे गरीब और ब्रिटिश शासित देश में रहने वाला यह व्यक्ति रेलवे का स्वप्न देख रहा था। कोई और होता तो जनता उसे ठोकर मारकर बाहर कर देती। लेकिन यह व्यक्ति कोई साधारण व्यक्ति नहीं था। यह थे बंबई के साहूकार श्रीनाना शंकरशेठ, जिन्होंने स्वयं ईस्ट इंडिया कंपनी को ऋण दिया था। श्रीनाना शंकरशेठ का मूल नाम था जगन्नाथ शंकर मुर्कुटे, जो बंबई से लगभग १०० कि. मी. मुरबाड़ से थे। पीढ़ीगत रूप से समृद्ध थे। उनके पिता अंग्रेजों के बड़े नामी साहूकार थे। उन्होंने ब्रिटिश - टीपू सुल्तान युद्ध के समय बहुत धन अर्जित किया था। उनका एक मात्र पुत्र नाना थे। यह बालक मूँह में स्वर्ण चम्मच लेकर पैदा हुए था।

लेकिन धन ही नहीं अपितु ज्ञान और आशीर्वाद का हाथ भी सिर पर था। पिता ने एक विशेष अध्यापक रख कर अपने पुत्र को अंग्रेजी आदि की शिक्षा देने की भी व्यवस्था की थी। अपने पिता की मृत्यु के उपरांत, उन्होंने गृह व्यवसाय का बृहत विस्तार किया।

जब विश्व के अनेक देश अंग्रेजों के सामने नतमस्तक थे, तब ब्रिटिश अधिकारी नाना शंकरशेठ के आशीर्वाद के लिए अपने पैर रगड़ते थे। अनेक अंग्रेज अच्छे मित्र बन गए थे।

बंबई विश्वविद्यालय, एल फिन्स्टन कॉलेज, ग्रांट मेडिकल कॉलेज, लॉ कॉलेज, जेजे स्कूल ऑफ आर्ट्स, बंबई में कन्याओं के लिए पहला विद्यालय व बंबई विश्वविद्यालय नाना द्वारा स्थापित किये गये थे। इसलिए श्रीनाना शंकरशेठ ने बंबई में रेलवे प्रारंभ करने का विचार बनाया। वर्ष था १८४३, तब वे अपने पिता के मित्र सर जमशेदजी जीजीभाय उर्फ जे जे के पास गए। श्रीनाना



के पिता की मृत्यु के उपरांत वे श्रीनाना के लिए पिता तुल्य थे। उन्होंने सर जेजे को अपना विचार बताया, उन्होंने इंग्लैंड से आए सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश सर थॉमस एस्किन पेरी की भी राय ली कि क्या पारले, बंबई में रेलवे का आरंभ किया जा सकता है ? वे भी इस विचार से चकित थे। इन तीनों ने मिलकर भारत में इंडियन रेलवे एसोसिएशन की स्थापना की।

उस समय कंपनी सरकार का भारत में रेलवे बनाने का कोई विचार नहीं था। लेकिन जब श्री नाना शंकरशेठ, सर जेजे, सर पेरी जैसे लोगों ने कहा कि वे इस कार्य के लिए गंभीरता से इच्छुक हैं, तो उन्हें इस ओर ध्यान देना पड़ा। १३ जुलाई १८४४ को कंपनी ने सरकार को एक प्रस्ताव पेश किया।

बंबई से कितनी दूर तक रेल की पटड़ी बिछाई जा सकती है, इस पर प्रारंभिक रिपोर्ट तैयार करने की आज्ञा दी गई। उसके पश्चात 'बॉम्बे कमेटी' का गठन किया गया। नाना ने कुछ अन्य बड़े अंग्रेज व्यापारियों, अधिकारियों, बैंकरों को एकत्रित किया और ग्रेट इंडियन रेलवे की स्थापना कर दी। जिसे आज भारतीय रेल के नाम से जाना जाता है।

दिनांक १६ अप्रैल १८५३ को मध्याह्न ३.३० बजे ट्रेन बंबई के बोरीबंदर स्टेशन से थाना (ठाणे) के लिए हुई। इस ट्रेन में १८ डिब्बे और ३ लocomोटिव इंजन थे। इस ट्रेन के यात्रियों में श्री नाना शंकरसेठ एवं जमशेदजी जीजीभाय टाटा भी थे, जिसे विशेष रूप से अपनी पहली यात्रा के लिए फूलों से सजाया गया था।

नमन है श्रीनाना शंकरसेठ जी को

मंजिल दूर नहीं

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी

रामनाथ सूरज निकलने से पहले ही अपने खेत पर चला गया था। आज उसे फसल काटनीं थी। कहने के लिए वह खेत था। गाँव के बाहर बीहड़ में एक छोटा सा ऊसर भूमि का टुकड़ा। लेकिन इस टुकड़े पर वह मेहनत करता। सिंचाई का कोई साधन नहीं था। फसल की सिंचाई भगवान के भरोसे थी। कम पानी वाली, फसलें बोता था। उसका दिल हमेशा घबराता रहता, क्योंकि उसने सुना था खेत के बगल से सरकार की सड़क निकल रही है। कहीं यह टुकड़ा भी चला गया तो हम लोग क्या खायेगे? वह तो ईश्वर की कृपा मानता था। परिवार छोटा था। पति पत्नी और एक 10 साल की लड़की कमली। जो पढ़ना चाहती थी और उसमें प्रतिभा भी थी, काफी समझदार। घर की परिस्थितियों ने उसे समय से पहले ही समझदार बना दिया था। मजाल घर की स्थिति बाहर चली जाय। पत्नी भी सुघड़ थी जो ऐसी परिस्थितियों में घर को चला रही थी। गाँव के जमींदार के यहाँ बेगार करती थी, क्योंकि उसके ससुर ने कभी कर्ज लिया था जो अभी तक चुक नहीं पाया था। बेगार करते-करते ससुर का निधन हो गया। कर्ज नहीं पट पाया। बेटे के स्थान पर बेटे की पत्नी रामा बेगार करने लगी। जमींदार की पत्नी समझदार थी। वह थोड़ी बहुत जरूरत पर मदद कर देती। ऐसे ही समय कट रहा था, लेकिन चिंता के साथ। कमली के ऊपर ही उनकी आशाएं बैठी थी। उसकी होशियारी देखकर सोचते थे पढ़ा लिखा कर शादी करेंगे। गाँव वाले टोकते थे। 'मोड़ी सयानी है गयी है। टैम से ब्याह कर देऊ। कब पढ़ाउगे करनी तो रोटी है'

लेकिन रामनाथ हमेशा कहता पढ़ लिख कर शऊर आय जात है।

कलेक्टरनी बनाउगे।

'हाथ में पूंजी तो चहिये' बेच दे अपनो खेत हमही लें ले सबको मालूम था सरकारी सड़क निकल रही है अच्छा मुआवजा मिलेगा। लोगों की निगाहें रामनाथ की जमीन पर थी। कमली ओ री कमली रामा ने आवाज लगायी। 'अबे आय रही हूँ अम्मा',। कमली ने उत्तर दिया। का कर रही है? अम्मा ने फिर से आवाज लगायी। कमली ने आते ही कहा हाँ अम्मा बताओ का काम है' मोड़ी, खेत पे बाबू को रोटी दिया आज फसल काट रहे है। दिन रात मेहनत कर थोड़ी बहुत फसल उगा लेता। शहर कौन जाए ठेकेदार मनमानी दर से खरीद लेता। नमक रोटी चल रही थी। बात बाहर न जाती रामा ने कमली को एक कपड़े में बाँधकर रोटी दे दी। अम्मा तरकारी हती नाय, प्याज धरी है। कमली खेत पर पहुँच गई। बाबू रोटी रवाय लेऊ। कमली ने अपने पिताजी को आवाज लगा कर कहा बिट्टू रख तनी देर से लेहूँ, बाबू मैं बैठी हूँ। अम्मा ने कही खबाय कै अइयो' छाँय में बैठ जा हओ बाबू कमली नीम के पेड के नीचे बैठ गयी। बाबू कक्का की क्यारी से ततैया मिर्च लें आऊँ। आज तरकारी नाही है काये ? पुटरियाँ में प्याज रोटी और नौन। ततैया मिर्च से अच्छो लगोगो कमली ने बाबू को राय दी। जा, लिया' कमली को खेलने का मौका मिल गया। कक्का चार मिर्च दे दोय बाबू के लाने। मोड़ी तोर ले कमली ने मिर्ची तोड़ी और अपने खेत पर आ गई। अरे बाबू हमें मिर्च लेने गए तुमने खाय लओ अम्मा का कर रही है तुमाई। बाबू हवेली जाय रही थी। हुजूर ने बुलाई थी।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

हाँ बेचारी का करें घर को काम हवेली को काम और हमारे संग खेत पर काम

बिट्टू तू अब तू घर जा। बैल को पानी पियाय दिये।'

अँधेरों है गयो ना बाबू आये ना अम्मा कमली ने दिया जला के रख दिया।

कमली ने देखा अम्मा आ रही है हाथ में कुछ लिए है।

दौड़ पड़ी का लेआयी अम्मा

बिट्टू तरकारी है हुजूर की मेहरारू ने दर्ई है उनके भोत बन गई।'।

'अम्मा दिखाय दे चाख लेउ'

नेकऊ सबूरी नाय मोडी को

अम्मा बाबू आ गए। मोडी जा पानी दे बाबू को। कमली ने एक लोटा पानी भर के बाबू को दे दिया।

'कमली की महतारी मूड पिराय रहो है नेक चाय बनाय दें, लाय रही हो बस छान रही हूँ।

ऐ कमली बू छन्ना ले अइये चाय बारो।

तुमऊ अपनी चाय ले आओ। रामा अपने पति के पास आकर बैठ गयी।

एक बात बताऊ। अबकी फसल नेक अच्छी भई है। एक बैल से अब काम ना चलत तू कब तक लगेगी।

राम भरोसे कह रहो थो कल गाँव में डोडी पिटी थी। तहसील के पास केंद्र खुल गऊ है फसल खरीदी को सरकार खरीद रही है। पूरे दामन में, जो ज्यादा पैसा मिलेहि बासे बैल खरीद लें।

हवेली की बेगारी तो जिन्दगी भर की है। हवेली को कर्ज तो सुरसा को मोह है भरही नाय रहो। अब की बेर

ठेकेदार ते मना कर दियो।

चार रोटी अभी सेक के रख दे। भोर होतहि सब के संग चलो जाऊँगो। पूरे गाँव के लोग इकट्ठे जाएंगे।

दिये की रोशनी में रामा रोटी बना रही थी।

कमली की महतारी अबकी बार नोन मत. डार नेकसों गुड़ डार दिये। सबके सामने खोलोगो तो बुरो लगेगो। नोन की रोटी खैबो।

रामा सोच में पड़ गयी का करो। गुड़ की हडियाँ तो रीती है।

मुनिया की दादी अब माँगो तो नाही देत।

कमली नेक गुड़ की हडियाँ देदियो देख लेऊ नेकऊ बचो होय। अम्मा जामे में पानी डार दे। पानी मीठो है जायगों वासे आटा सान लिओ।

रामा ने कहो मोडी अकलमंद है गयी है।

मीठी रोटी तैयार हो गई। अम्मा नेक मोहि चरवाय दें।

इसकूल लें जइये। अब सो जा।

दिए को आँचल से हवा करके बुझा दिया तेल बच रहेगों को कल के लै।

अँधेरे में ही गाँव से सारी गाड़ियाँ तहसील की ओर चल पड़ी।

लोटेन में अँधेरा ना हो जाए। डकैतों का डर है आजकल तेजी से पकड़ चल रही है। सारे गाँव ने तय कर लिया एक साथ जाएंगे एक साथ आयेगे।

रामनाथ ओ रामनाथ चल जल्दी ते।

आय रहों हो। एक बैल गाड़ी कैसे चलती। राम भरोसे से उधार लेकर गाड़ी ले जा रहा था।

सुनो जी भगवान को माथा नवाऊँ और जाऊँ।

दिन भर बीत गया अँधेरा होने लगा अभी तक रामनाथ नहीं आया था। रामनाथ का छोटा सा घर गाँव के बाहर था। पूरा गाँव पार करो तब आओ। रामा के मन में बुरे बुरे विचार उठ रहे थे। सबको मालूम है फसल बेचने गए गाँव में मवाली घूमते रहते हैं। कहीं ऐसा ना हो फसल भेज दी हो तो पैसा छीन ले।

नही नही मैं ऐसा क्यों सोच रही हूँ सर को झटका दिया। हो सकता है शहर में रुक गए हो। कमली को भूख लग रही थी पर वह भी सहमी हुई बैठी थी।

"कमली जब तक पाठ याद कर ले। दिया दोबारा बार लें,,

हऊ माई।

अच्छे नम्बर ते पास भई तो साटन की फ्रॉक सिलवाऊँगी। अपना मन बहलाने के लिए कमली से बात करने लगी। ध्यान भटक गया।

कुंडी खटकी रामा जल्दी से उठकर दरवाजे की ओर बढ़ी। रोशनी कम थी टकराकर गिरी, ठोकर लगी तो खून निकल आया। परवाह न करके दरवाजा खोला। सामने रामनाथ खड़ा था। हाथ में पुड़िया में कुछ था। रामा खुशी से चहक उठी। आ गए कमली के बाबू। हाथ में का है।

कमली और तोहार लिए जलेबी। बिक गई फसल। आसमान की ओर हाथ उठाकर भगवान को धन्यवाद दिया। मेहनत की कमाई है। सब ठीक-ठाक है।

'क्यों जूँ, बैल तुम बटेश्वर के मेला से ले आओ वहाँ अच्छो मिलेगो।

कमली की महतारी पोहिनको

मेला तो पहले लग जात।

अरे हाँजू। मोहि सुत नाहि रही।

राम भरोसो बताय रहो रामपुरा में

बिकाऊ है। 'देख लो जाय के' थोड़े बहुत पैसा कम पड़े तो?

तुम चिन्ता मत करो, "अपनी झुमकी बेच देहो तैही सौ बैल जरूर खरीदो।

बहुत रात है गई अब चलो सोय जाओ। सवरे सोचेंगे।

रामा ने फुसफुसाते हुए पूछा। कायजू रकम कहा धरी है। संभार के रखियो।

अभै तो अंटी में ही है।

ओ कमली दिया शान्त कर दे

चतुर्वेदी चन्द्रिका

सवेरै पढ लिये। भोत रात है गयी।

रामनाथ सुबह बैल की तलाश में राम भरोसे के गाँव गया। बात बन गई और बैल घर आ गया। हर फसल पर थोड़ा-थोड़ा रुपया देने की बात हुई।

बैल को घर पर आया देखकर कमलिया बहुत खुश हुई। अब हमारे पास बैल की जोड़ी है।

बाबू पहले मन्दिर चलो भगवान के दर्शन करने कमलिया ने कहा।

आखिर में तय हुआ चलो बैलगाड़ी से बटेश्वर का मेला देख आए। कब से मन में आस लगाये थो भगवान के दर्शन करने की।

रास्ते में खाने के लिए आज पूडियाँ तली गयी। डिब्बा भर के पानी रखा गया और थोड़ी सी आलू की तरकारी। बैल घर में आया है। खुशी की बात है। कमली की महतारी बैलो के ले सूखों चारों धरले। बे का भूखे रहेंगे। सूखा चारा गाड़ी में बिछा लिया। ऊपर से बोरे की पल्ली बिछ गयी।

गाँव से और भी गाड़ियाँ जा रही थी। सभी एक साथ चली। चलते-चलते ही सभी ने गाड़ी रोक के खाना खाया। कुए का ठंडा पानी पीकर चले। दूर से ही में मेले की चहल पहल दिखाई पड़ने लगी।

लाउडस्पीकर के भोंपू बहुत दूर तक लगे थे। 2 फीट की औरत से मिलो टिकट्स दो आने की। मौत का कुआँ। समोसे और गरम जलेबी की आवाज़ आ रही थी।

कमली आज छोटा बच्चा बन गई।

अम्मा हमें कंगन चाहिए जलेबी और पानी पुरी खाएंगे। बिजली वाला झूला झुलाइय दियो।

गाड़ी मेले के बाहर लगा दी तथा बेल ढील दिए। एक दूसरे को हाथ पकड़े रखियो।

बटेश्वर नाथ जी के दर्शन करने के बाद। सब मेला घूमने लगे भीड़ इतनी थी कि सब अलग-अलग हो गए। कमली अपनी अम्मा के आगे आगे चल रही थी पीछे से अम्मा और बाबू।

अम्मा ओअम्मा ताऊ आहि रहे हैं।

अम्मा ने झट लम्बा सा घूँघट खींच लिया।

बहन जी आइये चरखी की दो सीट खाली है मर्द मेहरिया का एक रुपया। बच्चों का आधा अठन्नी।

अम्मा झूले, अम्मा और बेटी बैठ गई जैसे ही झूला ऊपर गया कमली की चीख निकल गई। डर के अपनी अम्मा के चिपक गई।

अम्मा मोहे डर लग रहो है करे जो उड़ रहो है।

मने कर रहे मत झूलो।

. साकल लेने हैं। रामनाथ ने कहा

इसी बीच में कमली का हाथ छूट गया और वह भीड़ में गुम गई।

इधर कमली बाबू और अम्मा को ढूँढ रही।

ढूँढते ढूँढते कमली मेले में बाहर की ओर निकल गई। जहाँ गाड़ियाँ खड़ी थी।

अरे यह तो जैन मन्दिर सौरीपुर का रास्ता हैं। आगे तो जंगल है, थक गई थी एक जगह खड़ी हो गई। अचानक उसकी नजर बगल में झाड़ी के पास गई देखा एक बोरा पड़ा हुआ है। उसमें कुछ है जो हलचल हो रही थी। कमली हिम्मत कर उस बोरे के पास गई। तभी उसे कड़कती हुई आवाज सुनाई पड़ी।

खबररदार, हाथ मत लगाना नहीं तो गोली चल दूँगा, एक बार कमली काँप गई।

झटके से दूर हट गई। उसके दिमाग में बिजली सी कौधी। आजकल पकड़ चल रही है, हो सकता है कोई बच्चा हो। वह बिजली की तेजी से बोरे के पास गई और बोरा तेजी से खींचकर आगे ले आई। गोली चलने की आवाज सुनाई पड़ी। बोरा खोलने का समय नहीं था। वह बोरा खींचते हुए भागने लगी। उसे लगा उसके पीछे कोई भाग रहा है। पूरी ताकत से बोरा खींचते हुए भाग रही थी। भागाते भागाते वह एक पुलिस वाले के पास पहुँचते पहुँचते बेहोश सोकर गिर पड़ी।

भीड़ जुड़ गयी। अरे बच्ची को संभालो। पुलिस वाले ने

बोरे का मुँह खोला। उसमें ढाई तीन साल का एक छोटा सा बच्चा था। भगदड़ मच गई। बच्चा रोए जा रहा था। बच्चे के दोनों पैर बंधे थे।

सबको समझ आ गया यह कोई पकड़ है। कमली के मुँह पर पानी के छींटे मारे, होश आ गया, और भी पुलिस वाले आ गए उसे प्रेम से बैठाला गया पानी पिलाकर जब शांत हो गई तो उससे पूछा।

कमली ने सारी घटना बात ही रही थी तब तक उसके अम्मा बाबूजी आ गए वह उसे ढूँढ ही रहे थे।

पुलिस दल सक्रिय हो गया और झाड़ियों के पास से बच्चों को चुराने वाले पकड़ लिए गए।

यह तो बहादुर बेटी है गोलियों की परवाह किए बिना बच्चों की जान बचाई

आज गाँव में भी जश्न होने वाला था। सरकारी अधिकारी बहादुर लड़की को इनाम देने आने वाले थे।

कार्यक्रम की व्यवस्था जमींदार ने की थी। समय पर कार्यक्रम हुआ।

अधिकारी ने कमली के घर परिवार की पूरी जानकारी लेकर सरकारी सहायता दिलाने का आश्वासन दिया।

जमींदार से भी बात हुई बही खाता देखे गए। जमींदार ने कर्ज समाप्त की घोषणा कर दी। अब रामा स्वतंत्रता थी। कमली गांव की बेटियों के लिए एक प्रेरणा बन गई।

रामा अपने घर में बैठकर अब डिलया बनाने का कार्य करने लगी। जिसे रामनाथ हाथ में भी ज्यादा हाथ में चार पैसे और आने लगे। कमली को सरकारी सहायता मिल गई। उसे अब शहर

जाकर पढ़ना था, हॉस्टल में रहने की व्यवस्था थी।

कमली शहर में जाकर हॉस्टल में रहकर पढ़ने लगी। छुट्टियों में वह अपने गाँव आती तथा माँका हाथ बँटाती। पढ़ने में वह होशियार थी और अच्छे नंबरों से पास होने लगी इस कारण उसे वजीफा भी प्राप्त होने लगा। पढ़ाई अब पूरी हो चुकी थी। और उसे अब हॉस्टल छोड़ना पड़ा।

कमली ने अपने मन में तय कर लिया वह अधिकारी बनेगी और इसके लिए वह लगातार परिश्रम करने लगी। अपने घर पर। परीक्षा के लिए फॉर्म भर गया उसे फॉर्म के लिए पैसा की व्यवस्था कैसे हो रामनाथ बहुत परेशान था। लेकिन रामा ने थोड़ी सी बचत करके रखी थी। वह पैसे इस समय काम आ गए। कमली और ज्यादा परिश्रम करने लगी।

कमली बिट्टू तुम कहाँ हो?

हाँ अम्मा आय रहे हैं।

दोनों माँ बेटी एक ही थाली में खाना खाने लगी।

मोड़ी पहले तू रोटी खा ले। बाद में पढ़ लिए।

अम्मा तुम्हारे संग ही खइहै, कमली ने उत्तर दिया।

घर की स्थिति में अभी कोई ज्यादा परिवर्तन नहीं आया था।

अम्मा तुम हमें तरकारी देत हूँ और खुद नॉन से खाती हो अब जे नही चलौंगो,

माँ ने खाना खाते हुए पूछा

बिट्टू जब तुहार नौकरी लग जायी, तू शहर रहिबो। हम मनिया का करब ? तुहार सुत आइवें।

'अरे अम्मा पढ़ लिख गवा ताहि अम्मा बाबू भुलहि

सबे संगे रहवा'। रामनाथ भी आ गया। दोनों को एक साथ खाना खाते देखकर उसकी आँखों में आँसू आ गए।

बिट्टू कल तिहाई परीक्षा है सब कुछ तिहाये ऊपर ही जिम्मेदारी हय हम मनिया की'

'' बाबू अपनी बिट्टू के ऊपर विश्वास नाय ,'

अच्छा छाँड़ो सब बतिया कालअंधेरे ही निकस चलहि। टैम सेपहुँच जाय।'

परीक्षा हो गई रिजल्ट भी निकल आया। और कमली अब कमला डिप्टी कलेक्टर थी।

बंगला नौकर चाकर सभी मिले। अम्मा बाबू को लेने चपरासी गया।

देखो कमली की महतारी आज कमली के हमाय लें टैम नाय चपरासी भेजोहै।

चपरासी वापस आ गया उन्होंने आने से इनकार कर दिया। कमली ने सोचा हो सकता है कोई काम हो इसलिए नहीं आए। नई नौकरी काम ज्यादा व्यस्त हो गई।

अब गाँव जाने के लिए उसके पास समय नहीं था। नई नौकरी छुट्टी का प्रश्न नहीं।

कमली पूरी तरह से बदल चुकी थी। रहन-सहन में काफी अंतर आ गया था। गाँव से जो भी शहर जाता आकर बताता ।

तिहाई बिट्टू मैम है गयी है।

सुनकर दोनों प्रसन्न भी होते और दुखी भी। दो-तीन बार चपरासी आया मगर वह नहीं गए। फोन था नहीं जो बात हो जाती । पत्र वह पढ़ नहीं सकते थे । चपरासी से क्या बात होती पूरी नहीं मालूम होती । धीरे-धीरे 2 साल बीत गए।

रामनाथ के खेत से सरकारी सड़क निकलनी थी। काम शुरू हो गया। मुआवजे के कागज बन गए और तहसील में देने थे।

रामनाथ असमंजस था जाऊँ की ना जाऊँ? बिट्टू मिलेगी और उससे नाराज था। पैसा रामनाथ के बिना दूसरे को न मिलना था अँगूठा लगना था, रामनाथ का।

ममता ने जोर मारा और रामा ने कहा

कमली के बाबू हमहूँ चलहि" आँखें तरस रही मोड़ी को देखबै को

पति पत्नी दोनों तहसील पहुँचे।

चपरासी ने देखकर मैडम को सूचना दी।

मैडम आपकी मम्मी पापा आए हैं। बगल वाले कमरे में बाबू के पास गए हैं। बाबू से बात करने के बाद वह गाँव निकलने लगे। आँखें कमली को ढूँढ रही थी। वह चपरासी भी नहीं दिखाई दिया जो गाँव जाता था । कमली के बाबू एक बार कमली का ढूँढो दुरई से देख लेव। रामनाथ तैयार नहीं हुआ।

'नाही मिलै का जरूरत

उका फुर्सत नाही तो हम का भी नाही।

चलवा

हमका काहे खातिर इहाँ लावा

दोनों गेट की तरफ चलने लगे

कमली इतना सुनते ही सारा काम छोड़कर जल्दी से बाहर आई पर वह दिखे नहीं।

दूसरे चपरासी ने बताया अभी गेट की तरफ जा रहे थे।

यह क्या मैडम ने दौड़ लगा दी गेट की ओर

वह भूल गई कि मैं डिप्टी कलेक्टर हूँ।

दूर से ही आवाज लगाई अम्मा बाबू। दोनों ने पीछे मुड़कर देखा वह भी उधर से दौड़े और इधर से उनकी कमली बिट्टू बाबू के गले से लिपट गई आँखों से गंगा जमुना बहने लगी। सारे गिले शिकवे दूर ।

बाबू सामान।

"मंगालेव तोहर हरकारेवे

सर्दियों में दिल का दौरा

- डॉ हेमन्त चतुर्वेदी, हृदय रोग विशेषज्ञ
इंटरनल हॉस्पिटल, जयपुर

सर्दियों में दिल का दौरा पड़ने के लगभग 53 प्रतिशत मामले सुबह के समय ही होते हैं। सर्दियों की सुबह के तीन घंटे दिल और हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों के लिए भारी पड़ते हैं। गर्मियों की तुलना में सर्दियों के मौसम में दिल का दौरा पड़ने के मामले लगभग 25 प्रतिशत तक बढ़ जाते हैं। हृदय रोगों से प्रभावित लोगों के लिए ठंड अत्यंत नुकसानदेह साबित हो सकती है। सर्दियों के मौसम में कोरोनरी आर्टरी डिजीज यानी हार्ट की ब्लड वेसेल्स में थक्का जमने के कारण दिल का दौरा पड़ने के मामले कहीं ज्यादा बढ़ जाते हैं, जिन्हें कुछ सजगताएं बरतकर काफी हद तक रोका जा सकता है। इसके अलावा सर्दियों में हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों को भी सावधानी बरतने की जरूरत है। इसलिए इस मौसम में दिल के मरीजों को कुछ अतिरिक्त सावधानियां बरतनी चाहिए।

कोरोनरी आर्टरी डिजीज और हार्ट अटैक

हार्ट को ब्लड वेसेल्स में ब्लॉकेज होने की स्थिति को कोरोनरी आर्टरी डिजीज कहा जाता है। ये ब्लॉकेज कई कारणों से उत्पन्न हो सकते हैं। जैसे अत्यधिक वसायुक्त खाद्य पदार्थों के खाने से रक्त में कोलेस्ट्रॉल के स्तर का बढ़ना, जिसके कारण हृदय धमनियों में कोलेस्ट्रॉल जमा हो जाता है। इसी तरह हृदय धमनियों में कैल्शियम भी जमा हो सकता है। इस स्थिति में दिल को पर्याप्त मात्रा में रक्त की आपूर्ति नहीं हो पाती। इस कारण दिल का दौरा (हार्ट अटैक) पड़ने का खतरा बढ़ जाता है। हाई ब्लड प्रेशर से पीड़ित लोगों में भी दिल का दौरा पड़ने का खतरा काफी बढ़ जाता है।

कारणों पर नजर

सर्दी के मौसम में ठंड हमारे शरीर के सिम्पैथेटिक सिस्टम को उत्तेजित कर देता है जिससे हार्ट में ब्लड फ्लो बढ़ जाता है, धड़कन भी बढ़ जाती है जिससे हार्ट पर ज्यादा काम करने का दबाव पड़ता है। सर्दी के मौसम में कभी कभी धूप ठीक से नहीं निकलती जिससे धूप के जरिए विटामिन डी पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलता। विटामिन डी हार्ट के हेल्थ के लिए काफी फायदेमंद होता है। अगर आप हृदय से संबंधित किसी समस्या से पीड़ित हैं तो सर्दियों में सुबह की सैर और व्यायाम के दौरान खास ख्याल रखने की जरूरत है। इस मौसम में व्यायाम या सैर के दौरान धमनियां

सिकुड़ सकती हैं और खून गाढ़ा हो जाता है। इस वजह से ब्लड क्लॉट बनने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में हार्ट अटैक होने की प्रबल आशंका होती है।

अत्यधिक ठंड के कारण हृदय के अलावा मस्तिष्क और शरीर के अन्य अंगों की धमनियां सिकुड़ती हैं। इससे रक्त प्रवाह में रुकावट आती है और रक्त के थक्के (ब्लड क्लॉट) बनने की आशंका अधिक हो जाती है। ऐसी स्थिति में दिल का दौरा पड़ने का खतरा बढ़ जाता है।

अक्सर लोग अत्यधिक सर्दियों के कारण रजाई या कंबल के साथ आराम करने को वरीयता देते हैं। सर्दियों के प्रभाव से अनेक लोग आलस्य के कारण नियमित रूप से व्यायाम नहीं करते। सर्दियों में खानपान में भी लोग चिकनाईयुक्त खाद्य पदार्थ कहीं ज्यादा खाते हैं। जिसके कारण सर्दी के मौसम में ब्लड प्रेशर तेजी से बढ़ता है। सर्दियों में अक्सर लोग अल्कोहल व अन्य मादक पदार्थों का सेवन ज्यादा करते हैं जिससे हार्ट की सेहत और बुरा असर होता है। ज्यादा मात्रा में अल्कोहल लेने से हार्ट की धड़कने तेज वी अनियमित हो जाती हैं जिसे एट्रियल फिब्रिलेशन कहते हैं। इन कारणों के अलावा सर्दियों में लोग देर से उठते हैं। इस दौरान लोग सुबह की सैर भी नहीं करते। सर्दियों में नमकीन और चटपटी चीजें खाने का ज्यादा मन करता है। इनमें नमक अधिक मात्रा में होने से ब्लड प्रेशर बढ़ाता है। सर्दियों में वायु प्रदूषण एक अहम कारण है। ठंडा मौसम, धुंध और प्रदूषक तत्व न केवल फेफड़ों में ऑक्सिजन की मात्रा प्रभावित करते हैं बल्कि हार्ट की पम्पिंग क्षमता को भी कम करके हार्ट फेलियर की अवस्था ला सकते हैं।

बचाव के उपाय

दिल की सेहत को दुरुस्त रखने के लिए और दिल से संबंधित किसी समस्या से बचने के लिए ब्लड प्रेशर की नियमित रूप से जांच करें या करवाएं। डॉक्टर की सलाह से दवाओं का सेवन करते रहें। देर शाम को खून पतला करने की दवा लेकर अल सुबह होने वाले हार्ट अटैक के खतरे को कम किया जा सकता है।

तेज ठंड में घूमने निकले से परहेज करें।

शरीर को ऊनी कपड़ों के जरिए गर्म रखें। अधिक समय तक

ठंड के संपर्क में रहने से बचें।

व्यायाम नियमित रूप से करें। ठंड ज्यादा होने पर घर के अंदर ही व्यायाम करें। योगभ्यास काफी लाभदायक होसकता है। अगर आप हार्ट स्ट्रोक या फिर हार्ट अटैक से ग्रस्त हैं तो भूल से भी अपने वर्कआउट रूटीन में पुशअप्स और सिटअप्स जैसी आइसोमेट्रिक एक्सरसाइज को शामिल न करें।

दरअसल, आइसोमेट्रिक एक्सरसाइज से मांसपेशियों पर दबाव पड़ता है जिसकी वजह से आपको हृदय रोग के साथ-साथ कई तरह की अन्य समस्याओं का सामना भी करना पड़ सकता है।

शरीर की सक्रियता को बनाए रखें यानी अपने शरीर का वजन न बढ़ने दें। सर्दी के दिनों में अमूमन लोग कम पानी पीते हैं, जबकि यह सेहत के लिए ठीक नहीं है। कम पानी पीने की वजह से सर्दियों में नसें सिकुड़ने लगती हैं, जिसका सबसे ज्यादा नुकसान हृदय रोगियों को होता है और हार्ट अटैक की आशंका बढ़ जाती है। इसलिए प्रचुर मात्रा में पानी पीना चाइये।

तनाव को दिमाग पर हावी न होने दें। दोस्तों, जीवनसाथी और परिवार के सदस्यों के साथ समय बिताएं। मौसमी फलों और हरी सब्जियां भरपूर मात्रा में खाएं। पानी का सेवन पर्याप्त मात्रा में करें। एक ही समय में ज्यादा भोजन न लें जिससे हार्ट पर दबाव बढ़ जाता है। इसलिये काम मात्रा में नियमित अंतराल पे भोजन लें। गुनगुनी धूप का आनंद लें लेकिन सिर पर अधिक देर तक धूप न लें। इससे डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती है। हार्ट के मरीज इमरजेंसी ड्रग्स जैसे एस्पिरिन, नाइट्रो ग्लिसरीन की गोली अपने पास रखे व छाती में दर्द होने पर उसका उपयोग आवश्यकता अनुसार कर सकते हैं।

क्या खाएं

ओट्स में फाइबर की उच्च मात्रा होती है, जो कोलेस्ट्रॉल के लेवल को कंट्रोल करता है। ओट्स का सेवन कोलेस्ट्रॉल स्तर को कम करने में मदद करता है। इसके अलावा इसमें ओमेगा 3 एसिड की भी मात्रा होती है, जिसे हार्ट के लिए फायदेमंद माना जाता है। यह डायजेसन में भी काफी आसान होता है।

कई अध्ययनों से अब पता चला है कि डार्क चॉकलेट आपके दिल को फायदा पहुंचा सकती है। इसका सेवन स्ट्रोक और अटैक के जोखिम को कम कर सकता है। डार्क चॉकलेट हार्ट के लिए तभी फायदेमंद है, जब उसमें कम से कम 60-70% कोको का शामिल हो। इसमें पॉलीफेनोल्स नामक फ्लेवोनोइड होता है, जो रक्तचाप, थक्के और सूजन को कम करने में मदद कर सकता है।

इसके अलावा हेलदी हार्ट के लिए नट्स के सेवन की सलाह भी दी जाती है। जिसमें आप बादाम, अखरोट, पिस्ता और मूंगफली का सेवन कर सकते हैं। इसमें मिलने वाले फाइबर आपके दिल के लिए अच्छे होते हैं। इनमें विटामिन ई भी होता है, जो खराब

कोलेस्ट्रॉल को मैनेज करने में हेल्प करता है। इसके लिए अखरोट भी काफी फायदेमंद होता है। इसमें अल्फा-लिनोलेनिक एसिड और ओमेगा -3 फैटी एसिड होता है।

टमाटर

हृदय-स्वस्थ के लिए अच्छा है, क्योंकि इसमें पोटेशियम की उच्च मात्रा होती है। इसके अलावा, यह एंटीऑक्सिडेंट लाइकोपीन का एक अच्छा स्रोत भी है। लाइकोपीन एक कैरोटीनॉयड है, जो खराब एलडीएल कोलेस्ट्रॉल के निम्न स्तर में मदद कर सकता है और रक्त वाहिकाओं को ब्लॉकेज से बचाता है

सिट्रस फ्रूट भी हार्ट के लिए अच्छा होता है, जैसे कि अंगूर या संतरा आदि। खट्टे फल भी विटामिन सी की उच्च मात्रा में होता है। जो हृदय रोग के कम जोखिम को कम करता है। इसके अलावा खट्टे फलों के फाइबर की भी मात्रा पायी जाती है। विटामिन सी दिल की बीमारियों के खतरे को कम करता है। लेकिन आप फ्रेश फ्रूट का सेवन करें तभी फायदेमंद है। इसे जूस के रूप में न लें।

लिमिटेड मात्रा में * कॉफी* का सेवन हार्ट के लिए हेलदी होता है। यह 10 से 15% कम दिल के रोगों का जोखिम कम करता है। कॉफी में भी ब्लैक कॉफी काफी फायदेमंद होती है। एक शोध में पाया गया है कि दिन में दो कप ब्लैक कॉफी से सेवन से हृदय रोग और स्ट्रोक के जोखिम को 30% तक कम कर सकते हैं।

दिल की बीमारी में क्या न खाएं

हेल्दी हार्ट के लिए ये बात भी जान लें कि आपको क्या नहीं खाना चाहिए, जैसे कि-

दिल के मरीजों को सेचुरेटेड फैट के सेवन से बचना चाहिए।

हार्ट पेशेंट के लिए रेड मीट का सेवन अच्छा नहीं है।

तली हुयी चीजें से उन्हें हमेशा बचना चाहिए।

अधिक बेकिंग प्रोडक्ट जैसे कि ब्रेड और बिस्कुट का कम से कम सेवन करें।

पिज्जा और अन्य जंक फूड का सेवन नुकसानदेह हो सकता है।

डायबिटीज, हार्ट और बीपी वालों के लिए अल्कोहल पीना खतरनाक साबित हो सकता है।

ठंड के मौसम में दही से सेवन से बचना चाहिए।

खाने में सोडियम के साथ अधिक चीनी के सेवन से भी बचना चाहिए।

नॉनवेज में फ्राइड आइटम खाने से बचें।

आइस्क्रीम का सेवन ठंड के मौसम में बिल्कुल भी न करे।

सीने में हल्की सी भी बेचैनी, पसीना, जबड़े, गर्दन, बाजू और कंधों में दर्द, सांस का टूटना बिल्कुल नजरअंदाज ना करें। इन लक्षणों के नजर आने पर तुरंत डॉक्टर से परामर्श लें।

आत्मघाती इलाज

- रुपक चतुर्वेदी, लखनऊ

हम एक कैव में जा रहे थे, मेरे भतीजे को दो तीन बार खांसी आने पर ड्राइवर ने तुरंत एक कफ सिरप देते हुए पीने की सलाह देते हुए बताया कि बस दस मिनट में राहत मिल जायगी। आप कहीं भी, कभी भी किसी से भी अपनी परेशानी बताएं, आपको होम्योपैथी या नैचुरोपैथी या आयुर्वेद या एलोपैथी चिकित्सा विधि से उपचार अवश्य बताया जाएगा, अपवाद स्वरूप ही शायद कोई डॉक्टर से सलाह लेने को कहता हुए मिले। इससे इतर हम लोग वीमार होने पर खुद ही दवा ले लेते हैं या दोबारा वीमार पड़ने पर पहली बार डॉक्टर द्वारा दवाओं का सेवन कर लेते हैं, लेकिन इससे लाभ होने की जगह नुकसान अधिक हो सकता है। कभी कभी हम कैमिस्ट या अन्य किसी की सलाह पर वगैर जरूरत के एंटीबायोटिक दवाओं को भी सेवन करने लगते हैं। डब्लू एच ओ के अनुसार चिकित्सक की सलाह के बिना इनका सेवन करना नुकसान पहुंचा सकता है। इसी रिपोर्ट के अनुसार छोटी छोटी बीमारियों एंटीबायोटिक दवाओं का इस्तेमाल करने से उनका शरीर पर पड़ने वाला असर कम हो सकता है। रिपोर्ट के अनुसार पिछले कुछ सालों में वायरस अधिक शक्तिशाली हो गए हैं, जिन पर कई एंटीबायोटिक और एंटीवायरल दवाएं अब काम नहीं करती हैं।

आजकल बैक्टीरिया को खत्म करने के लिए दी जाने वाली दवाओं का असर काफी कम हो रहा है, इस स्थिति को माइक्रोबियल रेजिस्टेंस कहा जाता है।

डब्लू एच ओ के अनुसार एंटी माइक्रोबियल रेजिस्टेंस की स्थिति आती है, जब बैक्टीरिया, वायरस, फंगी और पैरासाइट समय के साथ अपने स्वरूप को बदल लेते हैं। इस स्थिति में एंटीबायोटिक दवाओं का असर या तो बहुत कम होता है या फिर बिल्कुल नहीं होता है, जिस वजह से संक्रमण का इलाज करना काफी मुश्किल हो जाता है। इस स्थिति में बीमारी फैलने की आशंका और अन्य समस्याएं भी खड़ी हो सकती हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस का प्रमुख कारण सेल्फ मेडिकेशन है, जिसको आत्मघाती इलाज कहा जाता है।



आई एम ए के अनुसार किसी भी बीमारी का उपचार चिकित्सक की सलाह पर ही करना चाहिए, जिससे आप साइड इफेक्ट्स स्टीवंस जानसन सिंड्रोम से पीड़ित होने से बच सकते हैं, इस सिंड्रोम में मुंह, चेहरे एवं छाती पर दाने निकल आते हैं, जो जान लेवा भी हो सकता है। अतएव कभी भी अपने अनुभव या दूसरे की सलाह पर इलाज नहीं करना चाहिए। सदैव चिकित्सक के अनुसार ही दवा सही मात्रा एवं सही समय पर लेना चाहिए। यदि आप किसी दवा करने के बाद बेहतर महसूस कर रहे हैं तो भी दवा का कोर्स पूरा करें क्योंकि दवा लेने से प्रारंभिक स्तर पर आराम तो आ जाता है, लेकिन संक्रमण पैदा करने वाले सूक्ष्म जीव पूरी तरह खत्म नहीं होते हैं। कोर्स बीच में छोड़ने से सूक्ष्म जीव धीरे धीरे दवा के प्रति प्रतिरोध क्षमता हासिल कर लेते हैं तो अगली बार वह दवा असर नहीं करती है। हर दवा का इस्तेमाल विभिन्न परिस्थितियों एवं कई कारणों पर निर्भर करता है। सेल्फ मेडिकेशन बोलें तो आत्मघाती इलाज लाभ के स्थान पर नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए सभी को हमेशा छोटी छोटी बीमारियों का उपचार चिकित्सक की सलाह पर ही करना चाहिए।

स्वर्गीय महेंद्र नाथ 'विमलेश'

हीरा छिन हमसों गयो, लै गयो काल उडाय,
जो क्षति भई समाज की सो अब कही न जाय !
सो अब कहीं ना जाय, भयौ सूनापन भारी,
शेष रहि गयी करनी की कीरति उजियारी ।

कह उपेन्द्र कवि राय होति मन भारी पीरा,
अमर रहे विमलेश जाति के तुम थे हीरा !

-उपेंद्र नाथ पाण्डे, कोलकाता

मुंबई

दिवाली मिलन समारोह

बंधुवर पालागन,

रविवार, दिनांक 17-11-2024 को श्री माथुर चतुर्वेदी समुदाय मुंबई द्वारा बड़े हर्षोल्लास के साथ दिवाली मिलन समारोह का आयोजन होटल पार्ले इंटरनेशनल में किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण प्रेरणा स्रोत सम्मान रहा। हमारे अध्यक्ष और सह सचिव ने श्री अम्बुज चतुर्वेदी (पूर्व अध्यक्ष, मुंबई), श्रीमती रेखा चतुर्वेदी (पत्नी स्व. श्री नरेंद्र नाथ चतुर्वेदी, पूर्व अध्यक्ष, मुंबई), और डॉ. रचना चतुर्वेदी को स्मृति चिह्न एवं शाल भेंटकर सम्मानित किया। समारोह में संगीत ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुंबई के प्रसिद्ध गायक श्री प्रदीप चतुर्वेदी ने अपने सुरों से न केवल सभी को भावविभोर किया बल्कि नचाया भी। श्रीमती दीप्ति चतुर्वेदी और विशेष अतिथि, बृज एवं फिल्म जगत के प्रसिद्ध होली गायक श्री अवधेश गोस्वामी ने अपने गायन से समारोह को और भी मधुर और यादगार बना दिया। कार्यक्रम के दौरान, हमारी मुंबई कार्यकारिणी ने अपने तीन वर्ष सफलता पूर्वक पूरे किए और उसके साथ अध्यक्ष श्री विवेक जी ने अपने तीन वर्षों के कार्यकाल का विस्तृत लेखा-जोखा प्रस्तुत किया और उपस्थित बांधवों व उनके परिवारों को दिवाली की शुभकामनाएँ दीं। साथ ही, उन्होंने मुंबई कार्यकारिणी के सभी सदस्यों को स्मृति चिह्न भेंटकर आभार व्यक्त किया। डॉ. महेंद्र जी ने सभी उपस्थित जनों से मुंबई सभा की सदस्यता को बढ़ाने का आग्रह किया। इस अवसर पर अध्यक्ष श्री विवेक जी ने श्री पंकज जी का नाम मुंबई सभा के नए अध्यक्ष के रूप में घोषित किया। उपस्थित जनसमुदाय ने करतल ध्वनि के साथ उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्हें शुभकामनाएँ दीं। श्री पंकज जी ने ज़ूम के माध्यम से कार्यक्रम में उपस्थित होकर पद स्वीकार किया और सभी का धन्यवाद व्यक्त किया। अंत में, स्वादिष्ट भोजन के साथ यह शानदार और यादगार कार्यक्रम संपन्न हुआ। आप सभी की गरिमामयी उपस्थिति ने इस आयोजन को और भी खास बना दिया।

मधुपम चतुर्वेदी
सचिव - मुंबई सभा

लखनऊ

दिनांक 10 नवंबर 2024 रविवार को श्री माथुर चतुर्वेदी मंडल लखनऊ के अध्यक्ष श्री अजय जी के आशियाना स्थित आवास

पर लखनऊ मंडल की आम सभा की बैठक आहूत की गई।

बैठक का आरंभ अध्यक्ष अजय जी द्वारा गाई गई गणेश वंदना से हुआ, तत्पश्चात मंडल के आगामी कार्यक्रमों की जानकारी अध्यक्ष अजय जी द्वारा सदन को दी गई, उन्होंने बताया कि इस वर्ष मंडल की पिकनिक का आयोजन 22 दिसंबर को दिलकुशा गार्डन में होना निश्चित हुआ है जिसका कूपन मूल्य सदा की भांति 250 रुपये ही रखा गया है जो कि कार्यकारिणी प्रतिनिधियों से लिये जा सकते हैं जिसका सदन ने करतल ध्वनि से स्वागत किया, श्री भारत भूषण जी द्वारा इस पर पूछा गया कि 22 दिसंबर को ग्वालियर में महासभा की कार्यकारिणी की बैठक भी है इस पर संरक्षक शैल जी ने कहा कि पिकनिक में 200- 250 लोग शामिल होते हैं जबकि महासभा कार्यकारिणी में शहर से करीब 14 सदस्य हैं वो निर्णय उनका होगा कि वो मीटिंग में जाएं या पिकनिक पर ...पिकनिक पर वर्षा जी और स्वर्णेश जी के विचार थे कि पिकनिक किसी नए स्थान पर होनी चाहिए जिस उपाध्यक्ष प्रवेश जी ने कहा इस बार की पिकनिक का अंतिम रूप दिया जा चुका है तथा कूपन भी छप गए हैं अतः ये चर्चा निरर्थक है हाँ, अगले वर्ष कुछ इस पर विचार करेंगे ...आगे अजय जी ने बताया कि मंडल के स्पोर्ट्स आगामी 2 फरवरी 2025 को आयोजित किये जायेंगे जिसके लिए बाबू स्टेडियम की बुकिंग हो चुकी है तथा होली मिलन आगामी 23 मार्च 2025 को रवींद्रालय में होना प्रस्तावित है जिसकी बुकिंग प्रक्रिया शीघ्र ही सुनिश्चित की जाएगी... इन सभी आयोजनों के लिए अध्यक्ष श्री अजय जी ने समाज से सहयोग की अपेक्षा भी की इन सभी घोषणाओं का सदन द्वारा स्वागत किया गया तथा मंडल को पूर्ण सहयोग का आश्वासन भी दिया ...बैठक में संरक्षक शैल जी, मेजर जनरल(रि.) अजय जी, के अलावा श्री पदम जी, खुनखुन जी, अनिल जी, फडीन्द्र जी, दीपक जी, जलज जी, संजय जी होलीपुरिया, यदुवेश जी मिन्टू, यदुवेश जी पिंटू, प्रफुल जी, निखिल जी, मनीष जी, प्रवेश मुन्ना जी, वर्षा जी, स्वरणेश जी, आनंद जी, प्रभात जी, विनय जी, मृगेंद्र जी, सुनील जी, भारत भूषण जी, शिशिर जी, नितिन जी, हर्ष जी, दिवस जी, सौरभ फरीदी नगर, अंजुल जी, रितेश जी, बबिता जी, तनुजा जी, सुरभि जी, पूनम जी, मेघना जी सहित समाज के अन्य सम्मानित व्यक्तियों की भी उपस्थिति रही ...

बैठक के अंत में आयोजन की व्यवस्था एवं स्वादिष्ट जलपान के लिए सदन द्वारा अध्यक्ष अजय जी, उनकी माताजी श्रीमती कमलेश जी, अध्यक्ष जी की धर्मपत्नी श्रीमती शिल्पी जी एवं उनके छोटे भाई तरुण जी की धर्मपत्नी एवं महासभा कार्यकारिणी

चतुर्वेदी चन्द्रिका

सदस्या श्रीमती अमिता जी का आभार प्रकट किया गया।

— प्रवेश चतुर्वेदी मुन्ना
(तरसोखर / लखनऊ) उपाध्यक्ष

दीपावली मिलन

(राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रकोष्ठ)

दीपावली के अवसर पर दीपावली मिलन कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। सभापति श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी और डॉक्टर अरविंद जी (दिल्ली) के नेतृत्व में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा) व शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) द्वारा किया गया। जूम एप्प का संचालन भी लोकेंद्र जी (गाज़ियाबाद) द्वारा किया गया। महासभा के संरक्षक श्री भरत चतुर्वेदी जी व डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी जी विशेष रूप से उपस्थित थे। देशभर से लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। जिसमें विश्व विख्यात गायक श्री किशोर जी, प्रख्यात भजन गायक श्री प्रभंजय जी, प्रख्यात कवि धर्मेज जी, महासभा के पूर्व संपादक डॉ. कुश जी, दिलीप जी सिकन्दरपुरिया, श्री यदुवेश जी (लखनऊ), प्रख्यात होली गायक सौरभ जी, (लखनऊ), लखनऊ मंडल के मंत्री भी नमन जी, संजय जी, (लखनऊ) के साथ देश भर से बड़ी संख्या में लोगो ने भाग लिया। 8 वर्ष से 88 वर्ष तक के प्रतिभागियों ने भाग लिया। जनता के अनुरोध पर श्रीमती उषा जी, लोकेंद्र जी (गाज़ियाबाद), अंशुमान जी (जयपुर), डॉ. कुश जी (इटावा), संजय मिश्रा जी (कानपुर) ने अपनी अपनी प्रस्तुतियां दी। डॉ. अरविंद चतुर्वेदी ने अपना स्वागत भाषण से सबका अभिनन्दन किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी जी ने कार्यक्रम का समापन किया। आदरणीय भरत जी ने भी अपने आशीष बचन कहे। देश के 11 प्रदेशों के लोगों ने इसमें बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

तरसोखर समागम

आधुनिक जीवन की आपाधापी में हम सब जीवन-यापन या अन्य कारणों की वजह से अपनों से दूर रहने को मजबूर हैं, पर अपनों की तलाश में ही किसी भी शादी विवाह या सामाजिक कार्यक्रम में पहुंच जाते हैं, सौभाग्य से लगभग पांच वर्षों बाद दशहरा के बाद 19-20 अक्टूबर 24 को तरसोखर में सामाजिक सौहार्द मिलन का आयोजन किया गया था। अपनों से मिलने के उत्साह में एक हफ्ते पहले से ही सब एक-दूसरे को तरसोखर पहुंचने के लिए प्रोत्साहित करने लगे थे, हम-सब ने परिवार के

प्रत्येक सदस्य के साथ जाने का निश्चय कर लिया था। 18 अक्टूबर से ही लोगों का वहां पहुंचना शुरू हो गया था, जो पहुंचे वो दूसरो को फोन कर पूछ रहे थे कि कब आ रहे हो ? हम लोग अपनी गाड़ी से जब 19 अक्टूबर की सुबह तरसोखर पहुंचे तो देखा कि लगातार लोग अपनी आमद दर्ज करा रहे हैं। दोपहर तक लगभग साढ़े तीन सौ लोगों की आमद दर्ज हो गई थी।

इस सामाजिक समागम की शुरुआत हनुमान जी के मंदिर प्रांगण में आयोजित संगीतमय सुंदर काण्ड गायन के साथ हुई, जिसमें सभी आगंतुक उत्साहपूर्वक शामिल हुए। उसके बाद सभी एक दूसरे से मेलजोल में व्यस्त हो गए। 19 अक्टूबर की शाम को आयोजित वृहद संगीत कार्यक्रम में प्रोफेशनल म्यूजिकल ग्रुप ने विभिन्न मनमोहक झांकियां, भजन, गजल एवं गाने प्रस्तुत किए, यह शानदार प्रदर्शन का आनन्द लेने में कब रात का एक बज गया, पता ही नहीं चला।

दूसरे दिन 20 अक्टूबर को सभी आगंतुको ने गांव के देवस्थलो में दर्शन कर देवताओं का आशीर्वाद लिया, फिर सबने अपने अपने घरों में पूजा-अर्चना की, उसके बाद सामूहिक आयोजन में बहुप्रतीक्षित तरसोखर पारिवारिक विवरणिका (डायरेक्टरी) का विमोचन सर्वश्री गोपीनाथ जी, भूपेंद्र नाथ जी, भगवती प्रसाद जी, दिवाकर चंद्र जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न किया गया। अपने सम्बोधन में सभी ने इस उपलब्धि के लिए ललित जी एवं गप्पू जी एवं नानू जी की टीम को बधाई देते हुए दिल खोलकर प्रशंसा की। इसके बाद उपस्थित जनों को विवरणिका भेंट की गई।

इस अविस्मरणीय अवसर पर सभी ग्रामवासी अति उत्साहित थे। इस बार दो उपलब्धियां उल्लेखनीय रही, जिसमें स्मृति शेष बुद्धप्रकाश जी एवं स्मृति शेष लालता प्रसाद जी परिवार की चार पीढ़ी के लोग एक साथ गांव में एकत्रित हुए, उन्होंने घर पर ही सुन्दर काण्ड पाठ का आयोजन कर शाम को दीयों को जलाकर कार्तिक दीपोत्सव मनाया। दूसरी ओर जौनमाने परिवार ने अपने पूज्य देव स्थल पर अभिषेक का आयोजन किया। चि ध्वनि सुपुत्री नमन, वेद सुपुत्र प्रतीक जैसे चार पांच साल के बच्चों ने तो पहली बार अपने पुरखों का गांव तरसोखर देखा। मन तो सबका गांव में ही रह गया, लेकिन पुनः मिलने के विश्वास के साथ मिलन समारोह का समापन हुआ। इस आयोजन को गांव के ही सर्वश्री वीरेंद्र जी, संजय जी, नीरज जी, मुकेश जी, धनेश जी, संदीप जी (नानू), अभिषेक जी (गप्पू), विश्वास जी, ललित जी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए सभी गांववासियों के सहयोग से सफलता पूर्वक संपन्न किया।

—संदीप, ग्वालियर

श्रीमद् गीता से हिन्दूत्व

— रमाकांत (कछपुरा/लखनऊ)

जिस आदमी ने श्रीमद्भगवद गीता का पहला उर्दू अनुवाद किया वो था मोहम्मद मेहरुल्लाह! बाद में उसने सनातन धर्म अपना लिया! पहला व्यक्ति जिसने श्रीमद्भगवद गीता का अरबी अनुवाद किया वो एक फिलिस्तीनी था अल फतेह कमांडो नाम का! जिसने बाद में जर्मनी में इस्कॉन जॉइन किया और अब हिंदुत्व में है!

पहला व्यक्ति जिसने इंग्लिश अनुवाद किया उसका नाम चार्ल्स विलिक्नोस था! इसने भी बाद में हिन्दू धर्म अपना लिया उसका तो ये तक कहना था कि दुनिया मे केवल हिंदुत्व बचेगा! हिब्रू में अनुवाद करने वाला व्यक्ति Bezashition le fanah नाम का इसरायली था जिसने बाद में हिंदुत्व अपना लिया था भारत मे आकर! पहला व्यक्ति जिसने रूसी भाषा मे अनुवाद किया उसका नाम था नोविकोव जो बाद में भगवान कृष्ण का भक्त बन गया था! आज तक 283 बुद्धिमानों ने श्रीमद् भगवद गीता का अनुवाद किया है अलग अलग भाषाओं में जिनमें से 58 बंगाली, 44 अंग्रेजी, 12 जर्मन, 4 रूसी, 4 फ्रेंच, 13 स्पेनिश, 5 अरबी, 3 उर्दू सहित कई भाषाओं में हुआ है! जिस व्यक्ति ने कुरान को बंगाली में अनुवाद किया उसका नाम गिरीश चंद्र सेन था! लेकिन वो इस्लाम मे नहीं गया शायद इसलिए कि वो इस अनुवाद करने से पहले श्रीमद् भागवद गीता को भी पढ़ चुके थे ! ये है सनातन धर्म और इसके धार्मिक ग्रंथों की ताकत।

पत्नी जी खफा

मैं हुआ रिटायर,
सारे मोहल्ले में खबर हो गई..!
सब तो थे खुश पर,
पत्नी जी खफा हो गई !!

कल तक जो दीदी कहती थी,
आंटी आज पुकार रहीं।
जिनको हम दीदी कहते थे,
वे तीखे नयनों से निहार रहीं

मैंने पूछा प्यार से क्या हुआ
क्यों खफा हो गई ?
बोली मुझको घूर कर
मेरी तो फजीहत हो गई।।

मेरे काले बालों में वे
गोदरेज हेयर डाई तलाश रहीं।
घूमने जाने के नाम पर वे
सारे तीरथ बखान रहीं।

आप हुए रिटायर,
यानी उम्र आपकी 65 हो गई।
इस कारण पड़ोसनों को
मेरी भी उम्र ज्ञात हो गई।।

अगर हो रहे थे रिटायर,
तो पहले से धंधा तलाशते।
रोज की तरह निकल जाते,
और मेरी इज्जत संभालते।।
— भव्या, कक्षा 12

समाज समाचार

- श्री हिमांशु चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री दिलीप चतुर्वेदी-श्रीमती हिना चतुर्वेदी (होलीपुरा/संघाई, चीन) को चीन सरकार द्वारा 'यूलुन (मेग्नोलिया) पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें चीन में कृषि फ्यूचर और ऑप्शन (F&O) उद्योग के विकास में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया है। हिमांशु चतुर्वेदी अब इस प्रतिष्ठित सम्मान को प्राप्त करने वाले पिछले 43 वर्षों में मात्र 5वें भारतीय नागरिक बन गए हैं।



- श्री गिरिराज चतुर्वेदी-श्रीमती आभा चतुर्वेदी (कम्पिल/नासिक) ने अपने पुत्र चि. अमन चतुर्वेदी का शुभ

विवाह सौ. कृति सुपुत्री श्री विश्वतोष चतुर्वेदी-श्रीमती कविता चतुर्वेदी (बिजकौली/कानपुर) के संग दिनांक 12/ 11/24 के साथ सानंद संपन्न हुआ। इस अवसर पर आपने महासभा सहायतार्थ 1100/- रुपये प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.-3001)

- श्रीमती हिना चतुर्वेदी पत्नी स्वर्गीय श्री दिलीप चतुर्वेदी (होलीपुरा) ने अपने पुत्र श्री हिमांशु चतुर्वेदी को चीन सरकार द्वारा 'यूलुन (मेग्नोलिया) पुरस्कार' से सम्मानित होने की खुशी में छात्रवृत्ति निधि में Rs 11000/- का योगदान दिया।

- श्रीमति रश्मि निशंक चतुर्वेदी (फिरोजाबाद) ने अपने पुत्र चि .नमन- सौ.आकांक्षा के पुत्र रत्न पर माथुर चतुर्वेदी महासभा को 2100/- प्रदान किये। (र.क्र.3007)

बिछड़े स्वजन

- * श्री केदारनाथ चतुर्वेदी पिता श्री शैलेन्द्र चतुर्वेदी (महासभा कार्यकारिणी सदस्य) का स्वर्गवास (उचाड़/डबरा) का स्वर्गवास दिनांक 20/10/24 को हो गया।
- * श्री फतेहचंद चतुर्वेदी पुत्र स्व. नंदराम@निन्नामल चौबे (नाहटोली/कानपुर) का स्वर्गवास 95 वर्ष की आयु में दिनांक 20/10/24 को श्री प्रवेश चतुर्वेदी जी के आवास पर कानपुर में हो गया है।
- * श्रीमती रेखा चतुर्वेदी पत्नी श्री राकेश कुमार चतुर्वेदी (कुक्कू दादा) (इटावा) का देहावसान दिनांक 27 अक्टूबर 2024 को हो गया।
- * श्रीमती कुमुद चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री भोलानाथ चतुर्वेदी (बटेश्वर/देहरादून/भोपाल) का स्वर्गवास दिनांक 07 नवंबर 2024 को भोपाल में हो गया।
- * श्रीमती सरोज चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री गोकुल चंद्र जी 'बामन लाल जी (पुरा कन्हैया) का स्वर्गवास आज दिनांक 9/11/24 को चांपा (c.g.) में हो गया।
- * श्रीमती ज्ञान चतुर्वेदी पत्नी स्व. राकेश कुमार चतुर्वेदी (कमतरी/माईथान, आगरा) का स्वर्गवास दिनांक 12/11/24 को अपनी पुत्री रुचिका चतुर्वेदी के पास जबलपुर में हो गया है।
- * श्री करुण चतुर्वेदी पुत्र स्वर्गीय बिहारी लाल चतुर्वेदी (बनारस/उदयपुर/ जयपुर) का स्वर्गवास 12/11/24 को हो गया।
- * श्री विजय चतुर्वेदी (मैनपुरी/प्रयागराज), पूर्व अध्यक्ष, प्रयागराज शाखा सभा का दिनांक 13 नवंबर 2024 को प्रातः 8 बजे स्वर्गवास 86 वर्ष की आयु में हो गया।
- * डॉ. अनिल चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री बैकुंठाथ चतुर्वेदी (आगरा/दिल्ली) का स्वर्गवास दिनांक 13 नवंबर 2024 की रात दिल्ली में हो गया।
- * श्री शिशिरकांत चतुर्वेदी (सिकंदरपुर/ लखनऊ) का स्वर्गवास आज दिनांक 14 नवंबर 2024 को लखनऊ में हो गया।
- * श्री राजेंद्र प्रसाद चतुर्वेदी @ गुल्ला (भरतपुर/जयपुर) का देहलोकगमन दिनांक 16-11- 2024 को हो गया है।
- * श्री पंकज चतुर्वेदी पुत्र स्व. लखपत राय चतुर्वेदी (फरौली) का स्वर्गवास 62 वर्ष की आयु में दिनांक 13/10/2024 को आगरा में हो गया।
- * श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी पत्नी स्व० अम्बिका प्रसाद चतुर्वेदी (सिकंदरपुर खास/आगरा) का देहांत दिनांक 12/10/2024 को हो गया।
- * श्रीमती सुनीति विमलेश चतुर्वेदी (सिलरा,करेरा/उज्जैन) का स्वर्गवास दिनांक 1 अक्टूबर 2024 को उज्जैन में हो गया।
- * श्रीमती कल्पना चतुर्वेदी पत्नी श्री कमल चतुर्वेदी (चंद्रपुर/मैनपुरी /नोएडा) का स्वर्गवास हृदयगति रुक जाने के कारण दिनांक 17/11/24 को 66 वर्ष की उम्र में हो गया।
- * श्रीमती नीरा चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री खगेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (मैनपुरी) का स्वर्गवास आज दिनांक 20 नवंबर 2024 को 74 वर्ष की आयु में नोयडा में हो गया।
- * श्री अतुल चतुर्वेदी (कुक्कु) पुत्र स्व. महेंद्र नाथ चतुर्वेदी (तरसोखर/प्रयागराज) का स्वर्गवास लंबी बीमारी के बाद लगभग 64 वर्ष की आयु में दिनांक 21 नवंबर 2024 को हो गया।
- * श्रीमती प्रेमवती चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री कृष्ण कुमार चतुर्वेदी (दानपुर/वृंदावन/इंदौर) का स्वर्गवास दिनांक 23/11/2024 को इंदौर में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चन्द्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

a

प्रथम पुण्यतिथि

स्व.शरद चतुर्वेदी



जन्म - 26 सितंबर 1940

स्वर्गवास - 9 दिसंबर 2023

सुपुत्र - स्व.सतीश चंद्र- स्व.पुष्पा चतुर्वेदी
(तम्बाकू वाले)
मैनपुरी



श्रद्धावनत

अनुज वधू : उषा चतुर्वेदी

पुत्र - पुत्रवधू : अनुपम - चेतना

भतीजा - भतीजवधू : प्रतीक - हिना

पुत्री - दामाद : डॉ. रचना - अमित

वंदना - पल्लव

भतीजी - दामाद : पल्लवी - अनुराग

पौत्र : अबीर

पौत्री : युविका , पर्णिका

धेवते - धेवती : पलाश, पलोमी, मेहुल, केया, अरिल

135, मिश्राना, मैनपुरी मो.नं. अनुपम- 09412469614, प्रतीक -9897333221

नये वर्ष की नयी उमंग है,
नया जोश है नयी तरंग है।



जाते हुये लम्हों को अलविदा, आते हुये लम्हो का इस्तकबाल...
नये साल का नया पैगाम, जिंदगी में हर तल्खी का जवाब है मुहब्बत,
हर नफरत का जवाब है मुहब्बत,
और हर मुहब्बत का जवाब है दुगुनी मुहब्बत...

- दिलिप चौबे

2025
HAPPY NEW YEAR
नए साल की
शुभकामनाएं!



- दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001
- (0257) 2221095 | 2221195
- 2225195 | 2228495.
- rekhasgas20032003@rediffmail.com